द्वितीय अध्याय

मालती जोशी की कहानियों का कथ्य

कहानी लिखने के लिए कहानीकार को कहीं भटकना नहीं पड़ता। कहानीकार जो जीवन जीता है, उसीसे वह कहानियों की प्रेरणा भी लेता है। उसी जीवन से वह किसी संवेदनशील घटना का चुनाव करता है, और उसे शब्दों के द्वारा बहुत सूक्ष्मता एवं कुशलतासे बांधने की कोशिश करता है। इसके लिए उसे अनेक प्रकार के साधन जुटाने पड़ते हैं, जिनका एक प्रकार से कहानी शिल्प में समावेश हो जाता है। ये विभिन्न साधन ही वस्तुतः कहानी के तत्व होते हैं। इन्हीं तत्वों को मिलाकर एक कहानी की रचना होती है। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कहानीकार कहानी लिखते समय इन तत्वों का पहले गहन अध्ययन कर फिर कहानी लिखने की दिशा में अग्रसर नहीं होता, बल्कि श्रेष्ठ कहानी में ये सभी तत्व स्वयं आ जाते हैं और कहानी शिल्प का स्वरूप निर्धारित हो जाता है। समीक्षा शास्त्रियों ने कहानी लिखने के शिल्प को निश्चित करते हुए कहा है कि साधारणतः कथानक, कथोपकथन, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, देशकाल अथवा वातावरण, भाषाशैली एवं जीवन दर्शन आदि कहानी के प्रमुख तत्व स्वीकारे जाते हैं। पर यह भी जरूरी नहीं है कि जब तक इन तत्वों का पूर्ण समावेश किसी कहानी में न किया जाए तब तक उसे कहानी की संज्ञा से अभिहित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार कहानी में उपर्युक्त तत्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इन सभी तत्वों में कथानक कहानी में महत्त्वपूर्ण तत्व के रूप में दिखाई देता है। कथानक के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए 'उपेंद्रनाथ अश्क' ने कहा है, ''शरीर के लिए जिस प्रकार ढांचे की अवश्यकता है, उसी प्रकार कहानी के लिए कथानक की।''[1]

कथावस्तु, कथानक, विषय-वस्तु और अग्रेंजी का प्लॉट कथ्य के पर्यायवाची शब्द दिखाई देते हैं। ''कथानक का शाब्दिक अर्थ होगा कथा का छोटा रूप या सारांश। अपने विशिष्ट अर्थ में इससे

अभिप्राय है साहित्य के कथात्मक रूपों लोकगाथा, महाकाव्य, खंड़काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि का वह तत्व जो उनमें वर्णित कलाक्रम से श्रृंखलित घटनाओं को रीढ़ की हड्डी की तरह दृढ़ता देकर गति देता है और जिसके चारों ओर घटनाएं बेल की भांति उगती, बढ़ती और फैलती है।''[2] यह कथानक का अर्थ है। 'ई. एम. फार्स्टर ने' कथा और कथानक के बीच का अर्थ बताते हुए कहा है कि 'कथा सिर्फ घटनाओं का कालानुक्रमिक वर्णन होती है। जब की कथानक भी घटनाओं का वर्णन होता है, परंतु उसमें कार्यकारण संबंध पर विशेष बल दिया जाता है।' उदाहरण के तौर पर कहा जा सकता है कि 'राजा मर गया और बाद में रानी मर गई।' कहानी है। 'राजा मर गया और उसके वियोग में रानी मर गई' कथानक है। कथानक का अर्थ इस प्रकार से है -

2.1 कथावस्तु : कोशगत अर्थ

विभिन्न कोशकारों के द्वारा कथानक का दिया हुआ अर्थ इस प्रकार है -

2.1.1 मानक हिंदी कोश - (सं. - रामचंद्र वर्मा)

स्त्री (ष. त.)

उपन्यास, कहानी, नाटक आदि की वे सभी मुख्य बातें जिनसे उनका स्वरूप प्रस्तुत होता है।

विस्तृत अर्थ में वे सभी मुख्य बातें जो किसी साहित्यिक रचना में आयी हो या उसका विषय बनी हो।

2.1.2 प्रामाणिक शब्द कोश - (सं. - रामचंद्र वर्मा)

कथावस्तु - स्त्री (सं)

उपन्यास या कहानी का ढांचा (प्लॉट)

2.1.3 भाषा शब्द कोश - (सं. - रामशंकर शुक्ल - रसाल)

कथ्य (वि.) (सं कथ + य) कथितव्य।

कथानक (संज्ञा, पु. सं.)

कथा, छोटी कथा, कहानी गल्प। कथा सारांश (प्लाट)

2.1.4 हिंदी शब्द सागर - (सं. -श्यामसुंदरदास बी.ए.)

कथानक - संज्ञा पुं (सं)

कथा

छोटी कथा।

रचना का आदि से अंत तक का सामूहिक रूप, कथासार।

2.2 कथावस्तु : परिभाषा

कथावस्तु का विभिन्न कोशकारों द्वारा दिया हुआ अर्थ देखने के बाद कथावस्तु की परिभाषा देखेंगे। वह इस प्रकार है, "कथावस्तु की परिभाषा करते हुए उसे कहानी में सुनिबद्ध घटना सूत्रों का संकलन कहा जा सकता है जिसका समग्र रूप कहानी का मूल आधार होता है।"[3] दूसरे प्रकार से कथावस्तु की परिभाषा इस प्रकार है, "सैद्धांतिक स्वरूप के अनुसार कथावस्तु ही वह प्रारूप है, जो कहानी की निर्मिति में आधारभूत रूप से कार्य करता है।"[4]

2.3 कथावस्तु : महत्व

कथावस्तु को कहानी की रीढ़ कहा जाता है। प्रत्येक कहानी में कोई-न-कोई कथा होती है। कहानी में जो भी विषय लिया जाए, उसका स्वरूप इस प्रकार होना चाहिए कि उसे कम-से-कम समय में अपनी पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके। इसके लिए अधिक विस्तृत विषय लेना इसलिए योग्य नहीं होता क्योंकि कथानक में उसका विस्तार हो जाने का भय रहता है। और अगर उसे सूक्ष्म बनाने का प्रयत्न किया जाता है तो उसमें भावों का पूर्ण प्रकाशन और कथावस्तु का स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता। कथावस्तु कहानी का केंद्रीय आधार होती है। अन्य सभी तत्व कथावस्तु के सहायक और पूरक होते हैं। कथावस्तु में मौलिकता भी अपेक्षित है। जो कहानीकार की प्रतिभाशक्ति की परिचायक होती है। रोचकता के आभाव के कारण भी कहानी असफल हो जाती है। ऊपर विवेचित विभिन्न गुणों की क्रमबद्धता भी कहानी में होना आवश्यक है। डॉ. सुरेश सिंह के मतानुसार, "वास्तव में कथानक का स्वरूप एक नदी की भांति होता है, जिसमें पात्र, घटनाएं आदि इस प्रकार सहज पर कलात्मक ढंग से प्रवाहित होते हैं कि बिना किसी अवरोध या गतिरूद्धता के पाठक सहज ढंग से अंत में जाकर रुक पाता है, और तब उसे ऐसा प्रतीत होता है कि किसी सत्य या यथार्थ की तीखी प्रतिक्रिया अत्यंत प्रभावोत्पादक ढंग से जैसे उसे उद्वेलित कर रही है और वह अपने को उसके प्रभाव आवश-सा पाता है।"[5] कहानी का यह सर्वथा साधारण पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व होता है। जिसमें घटनाओं को जो साधारण तथा जीवन के यथार्थ को प्रतिध्वनित करती है, कुशल ढंग से सगुंफन होता है। पहले यह बात सर्वसामान्य ढंग से स्वीकार कर ही

आगे कहा जाता था कि कहानी का मूलभूत आधार कथानक ही होता है। जिसके बिना यह सत्य है कि कहानियों का अस्तित्व ही संभव नहीं होता। उसके साथ ही कथानक में दृष्टि का स्वस्थ होना और आत्मविश्वास की दृढ़ता यह गुण भी आवश्यक होते हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क के मतानुसार, ''वह सीधी अपने ध्येय की ओर जाती है, इधर-उधर नहीं, रास्ते में किसी प्रकार की रुकावट, अनावश्यक विस्तार, अप्रासंगिक बातचीत सब उसे असह्य है। पंक्ति के साथ पंक्ति पैरे के साथ पैरा ऐसा गठा होना चाहिए जैसे जंजीर की कडियां, कोई पंक्ति उसमें से निकाली न जा सके, कोई बढ़ाई न जा सके। और प्रवाह उसमें नदी का सा होना चाहिए, बस पाठक शुरू करे की बहता ही चला जाए।''[6] इसके साथ ही कथानक को जीवन के यथार्थ से उभरना चाहिए जिसमे भाव, स्पंदन, मानव चेतना और आधुनिकता का अभूतपूर्व संमिश्रण हो जिसके कारण वह अधिक सहज और बोधगम्य प्रतीत हो सके वास्तव में प्रत्येक दृष्टिकोन से कहानी का संबंध जीवन के यथार्थ से ही होता है। कहानी के कथानक पर युगबोध का भी यथेष्ट प्रभाव पड़ता है और वह समकालीन जीवन को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में देखने और परखने का प्रयत्न करती है।

इस प्रकार कहानी के कथानक में प्रथम और अंतिम प्रवृत्ति जीवन और समाज के यथार्थ से ही संबद्ध होती है। वही कहानी अच्छी और श्रेष्ठ कहानी स्वीकारी जाती है। जो जीवन के यथार्थ को स्पष्ट करती है। कहानी सार्वभौमिक और मानवता का ही दूसरा रूप होती है, और उसकी दृष्टि भविष्य में गड़ी होती है, और वह अधिक स्वस्थ एवं पृष्ठ होती है।

कहानी विधा में कहानी के तत्वों में से महत्त्वपूर्ण तत्व कथानक या कथ्य को 'मालती जोशी' की कहानियों के द्वारा इस प्रकार स्पष्ट किया गया है।

2.4 **आखिरी शर्त**

'आखिरी शर्त' कहानी संग्रह - राजेश प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस कहानी-संग्रह का प्रथम संस्करण सन् 1997 ई. को निकाला गया है। कहानी-संग्रह में पृष्ठों की संख्या 128 है। इस कहानी-संग्रह में सात कहानियां हैं। विषय के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार करने का प्रयास किया गया है। रूढ़ियों के कारण मजबूर नारी का चित्रण 'आखिरी शर्त' कहानी में हुआ है। राजनीति के जाल से आतंकित परिवार का चित्रण 'शुभकामना' कहानी में हुआ है। घरवालों से आतंकित विधवा 'कोउ न जाननहार' कहानी में, तो तनावों का बोझ उससे उभरते सुख का चित्रण 'संवेदना' कहानी में किया है। बुढ़ापे तक एक-दूसरे का साथ देनेवालें पति-पत्नी का चित्रण 'साथी' कहानी में हुआ है। अर्थाभाव के

कारण रिश्तेदारों की ओर से अन्याय और अपमान का चित्रण 'औकात' कहानी में हुआ है। बाल-लीलाओं से भरे परिवार का चित्रण 'खेल-खेल में' कहानी में आया है।

अधोलिखित पंक्तियों में हम मालती जोशी की रचना 'आखिरी शर्त' में संकलित कहानियों के कथ्यों को प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे -

2.4.1 रूढ़ियों के कारण मजबूर नारी

'आखिरी शर्त' कहानी 'मैं' शैली में लिखी गई है। इसमें लेखिका और उसकी दीदी का चित्रण किया गया है। दीदी अपनी बेटी मधु की जल्दी-से-जल्दी शादी करना चाहती है। जब यह बात लेखिका को पता चलती है तो वह मधु जैसी ब्रिलियंट लड़की की I. A. S. की प्रीलिम की परीक्षा सर पर होने के कारण इतनी जल्दी उसकी शादी करने के खिलाफ है। मधु भी शादी की जल्दबाजी से नाराज हो जाती है। मधु की हालत देखकर लेखिका दीदी को समझाने की कोशिश करती है। अपनी तरह अपनी बेटी का नुकसान मत करों पुराणे विचारों को दिमाग से निकालकर उसके कैरियर की चिंता करों। ''पीढ़ियां बदल गई पर हमारी मान्यताएं वहीं की वहीं हैं। हम उन्हें अम्मां-बाबूजी कहते थे, बच्चे हमे मम्मी-पापा कहते हैं। बस इतना ही फर्क आया है बाकी सब जैसा का वैसा ही है।''[7] दीदी पर इसका कोई असर नहीं होता। घर आने पर जब लेखिका को यह पता चलता है कि उसकी बेटी अपनी पढ़ाई छोड़कर भरतनाट्यम् की गहन शिक्षा करने के लिए तीन साल के लिए मद्रास जाना चाहती है। तब वह बेटी को वहां जाने की इजाजत नहीं देती क्योंकि वह जानती है कि हिंदुस्तानी लड़के स्टेज पर नाचने वाली लड़की को देखना पसंद करते हैं उससे शादी करना नहीं। अंत में अपनी बेटी के बारे में अपने विचार सुनने के बाद वह शर्म से मुंह ढ़क लेती है।

इस प्रकार अपनी दीदी को नसिहत देनेवाली लेखिका भी किस प्रकार रूढ़ियों के जाल में फंसी हुई है। इसे दिखाकर कहानीकार स्पष्ट करती है कि प्रगतिवादी-सुधारवादी होने का ढोंग करनेवाले संघर्ष का मैदान छोड़कर समझौतावादी बनते हैं। उनका प्रगतिवाद औरों के आचरण के लिए होता है।

2.4.2 राजनीति के जाल से आतंकित परिवार

'शुभ कामना' कहानी में राघवन साहब मंत्री द्वारा किए हुए गबन के कारण अपमानीत होते हैं। यह अपमान सहन न होने के कारण राघवन साहब आत्महत्या करते हैं। राघवन साहब के परिवार से मिला जुला सदानंद का परिवार है। सदानंद ईमानदार इंजिनियर है। उसके घर की आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं है। इसी कारण घरवालों, रिश्तेदारों में सदानंद की पत्नी गौरी को हमेशी अपमानीत होना पड़ता है। यहां

तक की टी. वी., फ्रिज, गाडी न होने के कारण गौरी रिश्तेदारों को अपने घर बुलाती नहीं। मंत्री साहब की असलीयत सदानंद को मालूम होने से मंत्री जी सदानंद का मुंह बंद कराने के लिए उसे प्रमोशन देकर उसका तबादला करवाते हैं। सदानंद को उसके घर की आर्थिक स्थिति उसे यह स्वीकारने के लिए मजबूर करती है। पति की पतित होने की बात गौरी को अच्छी नहीं लगती। वह अपनी नाराजी-क्षोभ स्पष्ट करती हुई कहती है, ''अब वह विश्वास, वह अभिमान टूट गया है रोहित! तेरे पापा बिक गए हैं। अपना मुंह बंद रखने की कीमत लेकर चुपचाप यहां से जा रहें हैं।''[8]

इस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सदानंद मंत्री जी के राजनीतिक जाल में फंस जाता है। मंत्री जी की 'शुभकामना' से प्राप्त प्रमोशन गौरी को राजनीतिक आतंक लगता है। इस आतंक के सामने झुकनेवाले पति के प्रति उसके मन में आक्रोश भरा हुआ है।

2.4.3 घरवालों से आतंकित विधवा

'कोउ न जाननहार' कहानी में चित्रित मनु की शादी बड़ी धुम-धाम से होती है, पर कुछ ही दिनों में उसका पति मर जाता है। ससुरालवाले उसे अपशकुनी मानकर उसे उसके मायके भेज देते हैं। पिताजी बड़ी दौड़ धूप कर उसे उसके पति के स्थान पर नौकरी दिलवा देते हैं। उसके बाद पिताजी की मृत्यु हो जाती हैं। पिताजी की मृत्यु के बाद सारे परिवार की जिम्मेदारी मनु पर आ जाती है। मनु अपनी दो छोटी बहनों की शादी करती है और अपने भाई को डॉक्टर बनाती है फिर भी मनु ही अपने पति की मौत की जिम्मेदार होने की बात कहकर मां उसे कोसती रहती है, गालियां देती है। अपने भाई और बहनों के लिए इतना सब कुछ करने पर भी वह मनु पर सेठजी के साथ गलत रिश्ता होने का लांछन लगाते हैं। अपनी मां के श्राद्ध के दिन मनु कहती है, ''नहीं मेरी मां तो बाबूजी के साथ विदा हो गई। अब जो घर में थी वह तुम्हारी मां थी। एक स्वार्थी? झगड़ालू, मुंहफट खुसट बुढ़ीया थी, जिसने मेरा जीवन नर्क बना दिया था। तुमने तो उसका श्राद्ध आज किया है। मैं तो उसका तर्पण बरसों पहले कर चुकी हूं।''[9]

सेठजी की मृत्यु की खबर पढ़कर अनु अपनी दीदी से मिलने जाती है तब मनु अपने देवर के दो बच्चों के साथ खुशी से जीवन व्यतीत करती है। मनु अपनी बहन की शंका का निराकरन करती हुई कहती है, ''अनु दो एकाकी नक्षत्र अंतरिक्ष में भटक रहें थे। संयोग था कि आपस में टकरा गए। एक गूंज सी हुई, जो होनी थी। कुछ स्फुलिंग बिखरे जो स्वाभाविक था बस इतना ही था। इससे जादा हम दोनों के बीच कभी कुछ नहीं था।''[10]

आलोच्य कहानी की विधवा खुद नौकरी करके सारे घर की जिम्मेदारी उठाती है पर अंत में घरवालों की तरफ से उसे निराशा ही झेलनी पड़ती है। स्वार्थ पूर्ति के बाद रिश्तेदार उससे मुंह मोड लेते हैं। उनके आतंक से बचने के लिए वह देवर के बच्चों के साथ रहती है।

2.4.4 तनावों का बोझ उससे उभरते सुख

'संवेदना' कहानी में एक ऐसा परिवार चित्रित है जिसमें मम्मी-पापा और उनकी छोटी बेटी शुचि है, बड़ी बेटी की शादी हो जाने के कारण वह ससुराल में है। इस परिवार में सिर्फ दो बेटियां हैं बेटे की कमी भी दिखाई देती है। घर में शुचि की शादी की तैयारी चल रही है। एक दिन जब लखनऊवालों का खत आता है कि उन्हें लड़की पसंद है और वे जल्दी-से-जल्दी शादी करना चाहते हैं। तब मम्मी-पापा चिंता में डूब जाते हैं क्योंकि बेटी की शादी हो गई तो वे लोग अकेले पड़ जाएंगे।

जब थोड़े दिनों के लिए शुचि अपने ससुराल वालों के पास जाती है तो उन्हें अकेले दिन गुजारना मुश्किल हो जाता है। यहां तक की खाना भी उनके गले से नीचे नहीं उतरता। ऐसी स्थिति में मम्मी अपनी बड़ी बेटी का एक बेटा गोद लेना चाहती है। वह वैसी चिट्ठी भी बेटी को लिखती है पर बेटी इससे इंकार करती है। यह बात जानकर पापा मम्मी पर गुस्सा हो जाते हैं। तब पापा पाल आंटी जिन्होने गोद ली हुई सोनाली अब आंटी की शादी तय हो जाने के कारण अनाथ होने वाली थी उसे गोद लेने का फैसला करते हैं। यह बात सुनकर पाल आंटी उन्हें लड़का गोद लेने की बात कहती है तो पापा जवाब देते हैं "नो सिस्टर! आय नीड ए डॉटर। वन मोर डॉटर। आप तो जानती हैं मेरे भाग्य में लड़का है ही नहीं। आप तो खुद इस बात की गवाह रही हैं। फिर अपने भाग्य से लड़ने में क्या तुक है, और यहां कौन-सी इस्टेट रखी है, जिसके लिए वारिस चाहिए। जो कुछ जमा पूंजी थी इन लड़कियों पर लुटाकर मैं तो निष्कांचन हो जाना चाहता हूं। पर जिंदगी तो आगे भी चलेगी ना। उसके लिए तो सहारा चाहिए।"[11]

इस प्रकार अपनी बेटी की शादी हो जाने के बाद अकेले दिन गुजारने के तनाव में फंसे मां-बाप एक अनाथ बच्ची को गोद लेकर तनाव से मुक्त हो जाते हैं। कहानीकार ने अकेलेपन से मुक्त होने का मार्ग आलोच्य कहानी के द्वारा चित्रित किया है।

2.4.5 बुढ़ापे तक एक-दूसरे का साथ देनेवाले पति-पत्नी

'साथी' कहानी के अम्मां-बापूजी अपने छोटे बेटे के पास रहते हैं। अम्मां अपनी पढ़ी-लिखी बहू से हिचकिचाने के बाद भी अपने पति की हर फरमाईश पूरी करती है। बाबूजी जब अपनी बेटी अलका को

बुलाते हैं, तब बेटा बहुत नाराज होता है यह बात अम्मां बाबूजी से छिपाती है और स्थिति का अकेले ही सामना करती है। वह हमेशा बाबूजी को कमरे में ही खाना खिलाती है क्योंकि उनकी वजह से बहू और बच्चों को खाने में दिक्कत होती है। वे अपने बड़े बेटे के घर भी नहीं जा सकते क्योंकि वहां बेटा-बहू दोनों भी नौकरी करते हैं, इनकी तरफ ध्यान देने को किसी के पास वक्त ही नहीं है। उनका छोटा बेटा श्याम जब अम्मां के पैरो में आयोडेक्स मलता है तो तब "अपने भाग्य पर उन्हें ईर्ष्या हो आई। कभी सोचा भी नहीं था इतनी बड़ी गृहस्थी इतनी आसानी से पार हो गई।"[12] इसके बाद वह भगवान से इस भरे दरबार से उठाने की कामना करती है पर एकाएक उनकी आंखों के सामने बाबूजी की मूर्ति दिखाई देती है और वे सोचती हैं कि क्या वह बाबूजी को छोड़कर अकेली जा सकेगी ?

अंतिम समय तक एक-दूसरे का साथ देनेवाले पति-पत्नी सच्चे अर्थों में 'साथी' है। सच्चे 'साथी' के कारण बुढ़ापा बोझ नहीं बनता ऐसा लेखिका का मानना है।

2.4.6 अर्थाभाव के कारण अन्याय अपमान का शिकार

'औकात' कहानी की मीनू की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह अपनी मौसी के घर उसकी बेटी की शादी के लिए आई हुई है। जब से मीनू मौसी के पास आई है तब से मौसी ने उसे घर के कामों में इतना उलझा रखा है कि पूछो मत ! जब घर के सभी भाई-बहन पिकनीक पर जाते हैं तब मीनू घर का काम करती रहती है। मीनू की मां ने अपना सारा बजट ताक पर लगाकर ली हुई साड़ी को मौसी देखती भी नहीं; क्योंकि उन्हें किसी अच्छे उपहार की अपेक्षा थी। मीनू के पास शादी में पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं है। फिर भी उसकी सहेलियां उसे तैयार करती है। जब मीनू को मौसी की बेटी की शादी में देखकर एक अच्छा रिश्ता आता है तो मौसी उसका और उसके परिवार का अपमान करती है। यह बात सुनकर मीनू जो रिश्ता आने की बात सुनकर खुश थी मानो जमीन पर गिर जाती है। मीनू यह मान लेती है कि गरीब परिवार की लड़कियों को ऐसे अन्याय और अपमान का हमेशा सामना करना पड़ता है। "बेटे जरा पानदान उठाना। मौसाजी ने कहा। वह एकदम अज्ञाकारी सेवक की तरह उठ खड़ी हुई। यही औकात है उसकी इसी में रहना है।"[13] उसे अर्थाभाव के कारण अपमान अन्याय का शिकार होना पड़ता है।

2.4.7 बाल-लीलाओं से भरा परिवार

'खेल-खेल में' कहानी में दोपहर के समय बच्चे मम्मी-पापा का खेल खेल रहे हैं। पिंकी को मम्मी बनने पर एक ही साड़ी पहनना अच्छा नहीं लगता। पिंकी अपने पापा को बहुत बड़ा आदमी समझने के

कारण अपने छोटे भाई बबलू को पापा बनाने की जगह हरिया नौकर बनाती है। इसी बात से नाराज होकर बबलू खेल से बाहर होता है। नाराज बबलू को मनाने के लिए मम्मी उसे डाकू की मारपिट की कहानी सुनाती है तभी उसे एक बात समझ में आती है कि पिंकी को परियों की कहानियां पसंद है और उसका अंत भी सुखांत होना चाहिए नहीं तो उसकी आंखें बरसने लगती हैं। उसके बाद बबलू अपना हुलिया ठीक करके अपनी मिठाई लिए जयपुरवालें ताऊजी बनकर पिंकी के खेल में शामिल होने जाता है, और पिंकी को उसे खेल में लेना पड़ता है क्योंकि, "लाख कुछ हो, ताऊजी का अपमान तो किया नहीं जा सकता। बबलू भी इस बात को जानता है। दीदी अपने से तो यह सम्मान कभी नहीं देती। लेकिन जब बबलू ने अपने आप ही वह पदवी धारण कर ली तो उपाय क्या है ? अब तो स्वागत करना ही पड़ेगा।"[14] बबलू मिठाई बच्चों के लिए रखने के लिए कहता है। इस प्रकार वह खेल में शामिल हो जाता है। शाम को पापा के आने पर पिंकी पहनी हुई साड़ी उतार फेंक देती है और पापा के पास जाती है और बबलू और पिंकी पापा को घूमने जाने का आग्रह करने लगते हैं।

इस कहानी में बड़ों का अनुकरण करने की छोटे बच्चों की मानसिकता को केंद्रबिंदू बनाया गया है। खेल-खेल में बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। उनका विकास होता है इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रकाशित किया है।

2.5 मोरी रंग दी चुनरियां

मालती जोशी का नारी समस्या को वाणी देनेवाला कहानी-संग्रह 'मोरी रंग दी चुनरियां' विकास पेपर बॉक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है।

आलोच्य संग्रह में 4 कहानियों में से सती, मोरी रंग दी चुनरियां यह कहानियां विधवा समस्या, को मुखर करती हैं और अविवाहित नारी की व्यथा-वेदना को 'यातनाचक्र', 'आखिरी सौगात' यह कहानियां प्रकाशित करती हैं।

नारी जीवन का संवेदना के साथ चित्रण करनेवाली मालती जोशी की आलोच्य रचना का प्रकाशन सन् 1984 ई. में हुआ है। इसकी कीमत 40 रुपये और पृष्ठ संख्या 87 है।

2.5.1 वैधव्य नियति का खेल

'सती' कहानी में चित्रित नीलम का पति गिरीश एक अपरीचित सी बीमारी से ग्रस्त है। इसी कारण घर में सब परेशान हैं नीलम को हमेशा अस्पताल में भाग-दौड़ करनी पड़ती है। गिरीश की बीमारी के कारण

सब रिश्तेदार उसे मिलने आते हैं। एक दिन नीलम को विधवा कांता भाभी भी मिलने आती है। जब उसे कांता भाभी की विधवा होने पर क्या हालत हुई थी, घरवालों ने कैसे उसे परेशान किया ? किस प्रकार अपने पति के स्थान पर उन्हें जबरदस्ती नौकरी करनी पड़ी और अब भी बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। यह सुनकर नीलम चकित होती है। उसे अपनी चाची की याद आती है कि कैसे पति की मृत्यु के बाद चाची की हालत हुई थी, कैसे उसका श्रृंगार उतारा गया था। हमारे समाज में विधवा पर होने वाले अत्याचार को जानकर नीलम को डर लगता है कि, अगर गिरीश को कुछ हो गया तो उसे भी इसी प्रकार प्रताड़ीत किया जाएगा। ऐसी प्रताड़ना सहने की हिम्मत न होने के कारण नीलम आत्महत्या करने का फैसला करती है। ''बस, यही मौका हैं नीलम रानी ! निर्णय का यह क्षण हाथ से यदी फिसल गया तो पछताओगी रात दिन जो सिर पर मंड़रा रहा है वह अघट तो कभी भी घट सकता है। फिर वे लोग तुम्हें आंखों की ओट भी न होने देंगे उसके बाद जीना क्या और मरना क्या !''[15]

हमारे समाज में विधवा नारी के साथ अत्यंत हीन प्रकार का बर्ताव करने के कारण नीलम अपने पति की मृत्यु के पहले विधवा बन जाने के डर से आत्महत्या करती है। नीलम की आत्महत्या हमारी समाज-व्यवस्था पर करारी चोट है।

2.5.2 घरवालों से पीड़ित विधवा

'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी में चित्रित जया लेखिका के साथ कॉलेज में लेक्चरर है। एक दिन जब लेखिका अपनी बेटी की शादी तय होने की खुशखबरी सुनाने के लिए जया के घर आती है, तब उन्हें पता चलता है कि जया के घर में उसके पति की मृत्यु के कारण मातम मनाया जा रहा है। जया की शादी एक बहुत अमीर घर में तय हुई थी, लेकिन फेरे लेते वक्त दुल्हा अचानक गीर पड़ता है, और सबको पता चलता है कि लड़का निमपागल है और उसे मिरगी के झटके आते हैं। यह बात जानने पर जया के पिताजी जया को ससुराल भेजने से इंकार कर देते हैं। उसके बाद जया अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी करने लगती है। लेखिका जया के लिए शादी का प्रस्ताव लाती है, पर जया के पिताजी इससे इंकार कर देते हैं। अब जया के घरवालों को किसी तीसरे आदमी के द्वारा जया के पति की मृत्यु की खबर मिलती है। वह खबर सुनकर जया के घर में मातम मनाया जाता है। जया के घरवाले उसे अपने पति की पांच लाख की प्रॉपर्टी हासिल करने के लिए उसे विधवा के रूप में अदालत में खड़ा कर देते हैं। जिस घर में 35 वर्ष तक अपना जीवन गुजारा था उसके लिए मजबूरन जया को यह काम करना पड़ता है। इसे स्पष्ट करती हुए वह कहती है, 'हिंदुस्तानी औरत को एक सुरक्षित छत चाहिए, फिर चाहे वह पिता की हो अथवा भाई की, पति की हो अथवा बेटे की।' लेकिन

जब यह बात उसके सिर के ऊपर से गुजरने लगती है तो वह एक दिन हिम्मत करके इस कामसे इंकार कर देती है और पहले जैसी जया बनकर कॉलेज जाने का फैसला करती है। "बिल्कुल आ रही हूं। जनता से कहिए, जरा होशियार रहें। उसने अपने बेलैस अंदाज में कहा।"[17]

इस प्रकार जया के रूप में एक नारी को घरवालों के द्वारा पीड़ित होना पड़ता है इसका चित्रण किया है। कहानीकार स्पष्ट करती है कि नारी शोषण की मानसिकता घर-परिवार तथा समाज के सभी सदस्यों की होती है।

2.5.3 कुरूपता के कारण अविवाहित नारी

'यातना चक्र' शीर्षक कहानी की प्रेमा कुरूप होने के कारण उसकी शादी समय पर नहीं होती। वह 34 वर्ष की हो गई है, कन्या महाविद्यालय में पढ़ा रही है। आज तक उसे जितने भी लोग देखने आए उनके द्वारा उसे नकारा गया। उसकी दो छोटी बहनें दिखने में सुंदर होने के कारण प्रेमा से पहले उनकी शादी हो गई है और वह अपने घर में रच बस गई है। कुरूपता के कारण घरवालों और रिश्तेदारों के द्वारा जया को अपमानीत होना पड़ता है। पहले तो वह दूहाजू रिश्तों के लिए मना करती रहीं पर मां ने जब उसे समझाया तो वह चुप रहीं। एक दिन ऐसे ही कुछ लोग लड़की देखने के लिए आने वाले है इसी कारण घर में सब तैयारी करते हैं। सिर्फ लड़के की मां और उसकी मौसी आती है और कहती है कि लड़के को लड़की देखने की इच्छा नहीं। तो प्रेमा गुस्से में आकर अपने मन में दबा सारा अक्रोश उन पर निकाल देती है। फिर एक दिन जब प्रेमा अकेली घर में होती है तो वह शादी इच्छुक पुरुष अपने दो बच्चों के साथ प्रेमा को मिलने आता है। उस पर प्रेमा की बातों का अच्छा प्रभाव पड़ता है। "मुझे भी आपने सोचने के लिए मजबूर कर दिया। मैने देखा की आपकी बातों में दम है। इसलिए बच्चों को यहां लिवा लाया सोचा उन्हें भी आपसे मिलवाना चाहिए। उन्हें भी अपनी होनेवाली मां को देखने परखने का हक है। किसी अनजान व्यक्ति को एकदम से उन पर थोप देना अन्याय होगा।"[18] यह बात प्रेमा को भी अच्छी लगती है, वे बच्चे भी उसे बहुत पसंद आते हैं और उसका मन करता है कि उन बच्चों से जाकर पूछे की क्या तुमने मुझे पसंद किया है ? प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने वैवाहिक संबंधों में शारीरिक सौंदर्य की अपेक्षा विचार को देखने पर बल दिया है।

2.5.4 बेटी सिर्फ पैसे कमाने की मशीन

'आखिरी सौगात' कहानी की सुम्मी घर में बड़ी होने के कारण पिताजी के बाद सारे घर की जिम्मेदारी सुम्मी पर आ जाती है। सुम्मी इसे अपना कर्तव्य समझकर स्वीकार कर लेती है। सुम्मी की मां यह

सोचती है कि अगर सुम्मी की शादी कर दी गई तो उसके घर का खर्चा कौन उठाएगा ? इसलिए वह बड़ी बेटी के बजाय उससे छोटे भाई के लिए रिश्ता देखने लगती है। जब यह बात सुम्मी को पता चलती है तो उसे बहुत दुःख होता है। उसकी मां जितनी अपनी छोटी बेटी की फिक्र करती थी; उतनी सुम्मी की नहीं। वह हमेशा सबको यह बताती थी की सुम्मी को शादी में कोई दिलचस्पी नहीं है। यह जानकर सुम्मी अपनी बुआ का सहारा लेकर अपनी शादी तय करती है। मां को इस बात को चुपचाप स्वीकार करना पड़ता है। शादी के बाद भी सुम्मी को मिले हुए गिफ्ट और साडियां देने के लिए उसकी मां तैयार नहीं होती वे सारी चीजे निम्मी के लिए बचाकर रखती है। इससे नाराज होकर सुम्मी एक दिन पहले ही ससुराल जाने का फैसला करती है। उसका अब मां के घर में दम घुटने लगता है। "और उसने पहले ही बाहर निकलकर वह स्कूटर के पास खड़ी हो गई। उस घर में अब सांस लेना भी जैसे उसके लिए दूभर हो रहा था।"[19]

इस प्रकार सुम्मी की मां को सुम्मी की कीमत सिर्फ पैसे कमाने वाली मशीन के समान है। आलोच्य कहानी के द्वारा लेखिका स्पष्ट करती है कि रिश्ते-नाते, स्वार्थ की नींव पर टिके हुए होते हैं।

2.6 बोल री कठपुतली

मालती जोशी का यह कहानी-संग्रह किताबघर, 24/4866, शीलतारा हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 110002 से इसका प्रथम संस्करण - 1998 में प्रकाशित हुआ है इस कहानी-संग्रह की पृष्ठ संख्या - 128 है। इस कहानी-संग्रह की कीमत 50 रुपए है। इस कहानी-संग्रह में नौ कहानियां है। विषयों के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार करने का प्रयास किया गया है। विवाह पूर्व प्रेम के बोझ को स्वीकार कर चुपचाप जीने की विवशता का चित्रण 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में किया है। अपने कार्य से अपराध बोध की भावना का चित्रण 'अक्षम्य' कहानी में तो आपसी ईर्ष्या में फंसे परिवार का चित्रण 'सन्नाटा' कहानी में हुआ है। प्रौढ़ावस्था में विवाह के निर्णय का चित्रण 'हमको दियो परदेस' कहानी में हुआ है। ससुरालवालों के द्वारा मजबूर नारी का चित्रण 'परायी बेटी का दर्द' कहानी में है तो पति और घरवालों के द्वारा होनेवाले अत्याचार से उद्भूत घुटन का चित्रण 'बोल री कठपुतली' कहानी में हुआ है। प्रेम में असफल युवती का चित्रण 'रानियां' कहानी में तो मां और बेटे में तनाव का चित्रण 'आवारा बादल' कहानी में हुआ है। गोद लेने की रस्म से परेशान परिवार का चित्रण 'कोख का दर्प' कहानी में हुआ है।

2.6.1 विवाह पूर्व प्रेम के बोझ को स्वीकार कर चुपचाप जीने की विवशता

'प्रश्नों के भंवर' शीर्षक कहानी में चित्रित सुनील और अंजू एक ही कॉलेज में पढ़ने के कारण एक-

दूसरे से प्यार करते हैं। जब यह बात अंजू के घरवालों को पता चलती है तो वह अंजू का रिश्ता लेकर सुनील के घर जाते हैं। सुनील के पिताजी जातीय भिन्नता के कारण इस रिश्तें से इंकार कर देते हैं। सुनील तब अपने पिताजी की मर्जी के अनुसार शादी कर लेता है। अंजू भी अपना घर बसा लेती है। दस-बारह साल बाद जब अंजू उसी गांव में आती है तो वह शादी के कार्ड देने का बहाना बनाकर सुनील के घर जाती है। जब उसे यह पता चलता है कि सुनील की पत्नी का स्वभाव कर्कशा और चिड़चिड़ा होने का कारण उसे ससुरालवालों दूवारा सुनील के लायक न होने की प्रताड़ना दी जाती है। सुनील की पत्नी को सुनील के पिता, मां और बहन के साथ-साथ सारे रिश्तेदार भी इसी कारण उसे प्रताड़ित करते हैं और सुनील भी मुंह से कुछ नहीं कहता पर व्यवहार से यही जता देता है। इसी कारण सुनील की पत्नी को हमेशा अपमानीत जीवन जीना पड़ता है। जब अंजू सुनील के घर से निकलने लगती है तब सुनील की पत्नी को पता चलता है कि अपनी इस दशा की जिम्मेदार अंजू ही है तो वह पूछती है, "अब यहां क्या लेने आयी हो ? मेरी गृहस्थी का सारा रस तो ले गयी महारानी ! अब यहां क्या रखा है ? तुम्हारे तो दोनों हाथों में लड्डू हैं। यहां-वहां सबकी चहेती बनी हुई हो, तभी तो चेहरा ऐसा गुलाब बना हुआ है। पर मेरे हिस्से क्या आया ? सिर्फ इस घर की चौकीदारी ! ये किस जनम का बैर भुनाया तुमने ? मैने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? फिर क्यों मुझे इस मिट्टी में झोंक दिया ? क्यों मेरी जिंदगी मिट्टी कर दी ? क्यों ? आखिर क्यों ?"[20]

इस प्रकार सुनील की पत्नी की हालत पति के विवाहपूर्व प्रेम के बोझ को स्वीकार कर चुपचाप जीने की विवशता जैसा दिखाई देता है।

2.6.2 अपने कार्य से अपराध बोध की भावना

'अक्षम्य' शीर्षक कहानी में चित्रित शाम के परिवार में बीमार पत्नी, चार बच्चे, माता-पिता है। उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह अकेला कमाता है। उसकी पत्नी गीता बीमार होने के कारण सारे घर की जिम्मेदारी शाम की मां के ऊपर पड़ती है। इसी कारण वह हमेशा चिड़-चिड़ करती है और घर में झगड़ा होता रहता है। शाम इस सारे झंझट से तंग आता है। गीता की बीमारी के बाद सारे घर का नक्शा ही बदल गया है। अतः शाम को घर आने की इच्छा ही नहीं होती। इस परिस्थिति से तंग आकर आखिर गीता शाम को बिंदू की माफी मांगने के लिए कहती है। उसे ऐसा लगता है कि बिंदू पर हुए अत्याचार के कारण ही उसकी हाय इस घर को लग गई। फिर शाम को अपने सारे अपराध याद आते हैं कि किस प्रकार बिंदू दिखने में अच्छी न होने के कारण हमेशा ही उसकी अनचाही रही। अम्मा के बहकावे में आकर किस प्रकार वह उसे मारता पीटता था; और किस प्रकार झूठा लांछन लगाकर उस दिन श्याम ने उसे

अधमरी होने तक पीटा था, और मायके छोड़ आया था। उसके बाद बिंदू ने तलाक के लिए अर्जी दी थी और तलाक के बाद उसने गीता से शादी की थी। गीता की बात सुनकर श्याम बिंदू से माफी मांगने के लिए उसके घर जाता है। जब वह बिंदू के घर का दरवाजा देखता है तो उस पर 'बिंदू पराशर एम.ए., पीएच.डी; एल.एल.बी., प्रिन्सिपल विद्या निकेतन ज्यूनियर कॉलेज' की नेमप्लेट पढ़कर चकीत हो जाता है। उसके बाद वह घर को अच्छी तरह से देखता है तो उसे बिंदू की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होने का अंदाजा आता है। और घरों के मुकाबले साधारण सा दिखनेवाला घर अब बड़े दिमाख से खड़ा दिखाई देता है। शाम को बिंदू के घर के पास मंड़राता देखकर बिंदू की भाभी शाम पर अपना गुस्सा व्यक्त करती है। पर शाम तो सिर्फ माफी मांगने आया था और भाभी ने उसे गलत समझा। बिंदू घर पर न होने के कारण वह उसे भी नहीं मिलता "और अगर मिल भी लेता तो क्या होता ? अपमान सहने के लिए वह मानसिक रूप से तैयार होकर आया था। पर बिंदू भी अगर भाभी की तरह सोच लेती तो कैसे विश्वास दिलाता की वह सिर्फ माफी मांगने आया है। कैसे कहता की अभिशाप से मुक्ति के अलावा उसे और कुछ नहीं चाहिए।"[21]

इस प्रकार अंत में जब सभी रास्ते बंद हो जाते हैं तो शाम के मन में अपने कार्य के प्रति अपराध बोध की भावना दिखाई देती है।

2.6.3 अपनों के बीच अकेलेपन का शिकार

'सन्नाटा' शीर्षक कहानी मे चित्रित उत्तरा कॉलेज पर लेक्चरर है। उसकी बड़ी बेटी निशी की शादी हो जाने के बाद वह अपने आपको अकेला महसूस करती है, क्योंकि उसके पति को हमेशा सहारे की अवश्यकता होने के कारण उसकी छोटी बेटी अशु हर वक्त अपने पापा के पास उनकी सेवा में रहती है। जब उत्तरा के कॉलेज में उसकी पुस्तक को 'अकादमी पुरस्कार' मिलने पर 'सम्मान समारोह' आयोजित किया गया था। पर उस समारोह में उत्तरा को अकेले ही जाना पड़ता है, क्योंकि उत्तरा का पति अपनी पत्नी की कामयाबी न देख पाने के कारण बीमारी का नाटक कर समारोह में जाने से इंकार कर देता है। आशु भी पापा की देखभाल के कारण आने से इंकार कर देती है। यहां तक की उसे गुडलक कहने दरवाजें तक भी कोई नहीं आया।

उत्तरा अकेले ही सारे घर की जिम्मेदारी उठाती है। उसका पति तो नाम का वकील है। उन्हें तो सिर्फ बिजली का बिल भरने के काम से ही बुखार आ जाता है। उन्हें हमेशा किसी-न-किसी सहारे की अवश्यकता होती है। इसी कारण अशु अपना सारा समय अपने पापा के साथ ही बिताती है। इसी कारण अपनों के बीच उत्तरा को अकेलापन महसूस करना पड़ता है।

2.6.4 प्रौढ़ावस्था में विवाह का निर्णय

'हमको दियो परदेस' कहानी में चित्रित कुसुम पर दस वर्ष की आयु में ही अपने छोटे भाई रघू की जिम्मेदारी आ जाती है। फिर कुसुम बड़ी होने के बाद उसके पिताजी उसकी शादी तय कर देते हैं। तभी एक हादसे में पिताजी की आंखें चली जाती हैं। इस प्रकार पिताजी और छोटे भाई की जिम्मेदारी के कारण कुसुम अपनी बनी-बनाई शादी से इंकार कर देती है और नौकरी ज्वाईन कर लेती है। रघू को पढ़ाने; उसे नौकरी लगाने में कब उसकी शादी की उम्र निकल जाती है यह उसे भी पता नहीं चलता। अपनी शादी का खयाल दिल से निकालकर वह रघू की शादी बड़ी धूमधामसे करती है। पर जो बहू घर में आती है वह अपने मायकेवालों के बहकावे में आने के कारण घर का सारा वातावरण ही बिगाड़ देती है। वह हमेशा कुसुम को ताने देती रहती है। दिन भर उसके खिलाफ घर में षड्यंत्र रचा जाता है। इस स्थिति को देखकर बाबूजी कुसुम को शादी करने के लिए कहते हैं। पर जब अपनी भाभी का अत्याचार हद से बढ़ जाता है तो वह भी शादी कर लेती है। शादी के बाद जब कुसुम मायके आती है तो उसका अपमान ही होता है। जब बाबूजी बीमार थे तो यही हुआ था, तब उसकी भाभी ने 'इस घर में आयेंगी तो भाई का मरा हुआ मुंह देखेंगी' ऐसा कहा था। जब रघू के बीमारी की खबर मिलती है तो वह मायके जाने का फैसला करती है फिर सोचती है कि वहां जाकर भी उसे भाभी के ताने सुनने पडेगें यह सोचकर वह अपना इरादा बदल देती है, ''आप ठिक कह रहें हैं। वहां जाकर तमाशा करने से क्या फायदा! इससे मरीज को उल्टे तकलीफ ही होती है। वैसे भी हम जाकर क्या कर लेगें ? जो कुछ करना है, डॉक्टर को करना है, और वे कर ही रहे हैं।''[23]

इस प्रकार कुसुम अपनी भाभी के आतंक से बचने के लिए प्रौढ़ावस्था में विवाह कर अपने ससुराल जाना पसंद करती है। वह दुःख अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए शादी के बंधन को स्वेच्छा से स्वीकारती है।

2.6.5 ससुरालवालों के द्वारा मजबूर नारी

'परायी बेटी का दर्द' कहानी में चित्रित नीतू की बड़ी बहन की शादी बड़ी धूमधामसे हुई थी। उस वक्त नीतू बहुत छोटी थी पर उसे घोड़े पर आया हुआ राजकुमार-सा दूल्हा याद है। शादी के कुछ दिनों के बाद जीजाजी दीदी से झूठ बोलकर उसे मायके छोड़ जाते हैं। और इसका कारण बताते हैं कि उन्होने घरवालों के दबाव में आकर शादी की थी और अब मैं अपनी मर्जी से शादी करना चाहता हूं। यह सुनकर घर में सब दुःखी हो जाते हैं। दीदी पर तो जैसे पहाड़ गीर जाता है। इतना सब कुछ होने पर भी अपनी बाकी बेटियों के भविष्य के लिए मां दीदी को फिर ससुराल छोड़ आती है फिर दो ही महीनों के बाद दीदी की मृत्यु

की खबर मिलती है। इस तरह अपने दीदी का हत्यारा एक दिन अचानक नीतू की सांस को मिल जाता है वह उसे लेकर घर आ जाती हैं। इसी कारण ससुरालवालों से मजबूर होकर नीतू को उसकी आवभगत करनी पड़ती है, "दीदी की हत्या जिसने की थी, वह भला आदमी मेहमानोंवालें कमरे में मजे से सो रहा है अतिथ्य का अनचाहा कर्तव्य मुझ पर आ पड़ा है।"[24]

2.6.6 घुटन : पति और घरवालों के द्‌वारा

'बोल री कठपुतली' शीर्षक कहानी में चित्रित आभा को हमेशा ही ससुरालवालों से प्रताड़ित होना पड़ता है। आभा के ससूर ने आभा का रिश्ता वह एम.ए. है इसलिए मंजूर किया था। जब उसके हाथों की मेहंदी भी नहीं उतरी तब उसके हाथों में नौकरी का प्रस्ताव लाकर रख दिया तब उसे एक देहात में जाकर अकेले रहना पड़ा। इसी बीच आभा दो बच्चों की मां हो गई उसके ससूर की मृत्यु हो गई; उसके बच्चे हमेशा अपनी दादी के पास होने के कारण उनमें मां के प्रति आत्मीयता बहुत कम थी। जब उसकी सास बीमार होती है तब आभा का तबादला किया गया वह भी सास की देखभाल करने के लिए। जब वह अपने स्कूल में रम गई थी तो देवर डॉक्टर हो जाने पर अमीत ने उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहा सब के दबाव में आकर उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। खाली समय बिताने के लिए उसने फिर आस पास के गरीब बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उसके इस कार्य में आस पास की महिलाएं भी शामिल हो गई। अब वह कार्य जब महत्त्वपूर्ण मोड़ पर आ गया था तभी अमीत अपने प्रमोशन की और तबादले की ऑर्डर आभा के सामने रख देता है। तो वह अपने स्कूल के बारे में पूछती है इसी कारण पति और बच्चें उससे नाराज होते हैं क्योंकि इनमें से कोई भी उसकी मन की भावना को समझ नहीं सकता पर जब वह अपने मन का बोझ अमीत के सामने कम करने का प्रयास करती है तो अमीत उसे यह कार्य राजपुर में करने के लिए कहता है। "क्या हर बार इस तरह नये सिरे से शुरू करना संभव है, और हर बार क्या इसी तरह अपने किए-कराए को बिखेर कर अगले पड़ाव पर चल देना होगा ? क्या यही इन प्रयासों की सार्थकता है ?"[25]

इस प्रकार आभा को हमेशा अपने परिवारवालों के सामने झुकना पड़ता है, इसी कारण वह हमेशा घुटन महसूस करती है। उसे अपनी इच्छा की बलि देनी पड़ती है।

2.6.7 प्रेम में असफल युवती

'रानियां' कहानी में चित्रित वंदना एम.ए., पीएच.डी. है और समाजशास्त्र की व्याख्याता भी है। जब उसके डान्स का प्रोग्राम होता है तब खांसी उसे बेजार कर देती है। तब वह गला-नाक-कान के डॉक्टर

कुमार के पास जाती है। डॉ. कुमार सिर्फ उसका इलाज ही नहीं करते बल्कि उसका प्रोग्राम देखने भी आ जाते हैं, इससे इनकी मित्रता होती है। फिर दोनों साथ-साथ फिल्म, नाटक और कई प्रोग्राम देखने जाते हैं। इससे दोनों में एक नजदीकी रिश्ता बन जाता है। वंदना कुमार को चाहने लगती है, यहां तक की वंदना की मां भी कुमार को अपना दामाद मानने लगती है। पर एक दिन अचानक सक्सेना के द्वारा उसे पता चलता है कि कुमार की शादी हो गई है और वह दो बच्चों का बाप है। यह बात सुनकर वंदना को आश्चर्य होता है कि कुमार ने इतनी बड़ी बात की भनक भी लगने नहीं दी। जब वंदना अपने मन को समझाकर कुमार की खबर लेने आती है तो सक्सेना कुमार की लाचारी का कारण बताता है कि कुमार की बीबी झगड़ालू और गवांर होने के कारण वह बौद्धिक मित्रता के लिए तरसता रहा और आप से मिलने के बाद उसे अच्छा लगने लगा, यह दोस्ती बरकरार रखने के लिए उसने चुप रहना ही सही समझा यह सब बातें सुनकर वंदना उस वक्त तो चली जाती है। फिर कभी अपनी भड़ास निकालने का तय करती है, "लौटते समय भी उसका मन अक्रोश से लबालब था। यह तो अच्छा हुआ कि सक्सेना के अनुरोध पर उसने आज कुमार से मिलना स्थगित कर दिया था, नहीं तो शायद वह इस बमबारी को नहीं झेल पाता - सचमुच शहीद हो जाता।"[26]

2.6.8 मां और बेटे में तनाव

'आवारा बादल' यह घटना प्रधान कहानी है। गोविंद अठारह साल का है फिर भी पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अभी तक वह मॅट्रीक भी नहीं हुआ इसलिए उसके पड़ोस की औरतें अपने बेटे को उससे दूर रखना चाहती है। देशपांडे काकी तो एक दिन उसका अपमान करती है पर उसके बेटे को गोविंद ही डूबने से बचाता है। घर आने पर अपनी सौतेली मां का व्यवहार देखकर डूबने की बात किसी से नहीं कहता और उसे बचपन की बातें याद आती हैं। बचपन में जब मां नई-नई आई थी तब उससे बहुत प्यार करती थी पर एक दिन उसके मुंह से गाली सुनकर जब वह उसे थप्पड़ मारती है। दादी और अड़ोस पड़ोस की औरतें मां को गालियां देने लगती हैं। इस घटना के बाद से मां गोविंद की तरफ ध्यान ही नहीं देती और दादी के अत्यधिक प्यार के कारण वह बिगड़ जाता है। गोविंद घर में अपने कमरे में ही पड़ा रहता है, पर घरवालों के होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करता है। उसी दिन शाम को बुआ द्वारा चोरी का इलजाम लगाने पर गुस्से से जब घर से निकल जाता है। उसे ढूंढ़ने के लिए पड़ोस के लोग आ जाते हैं उनके द्वारा उसे यह पता चलता है कि आज मां उसकी तरफ से बुआ के साथ लड़ी है। यह बात जानकर वह अपनी मां की माफी मांगने के लिए तैयार होता है। "पता नहीं भाभी की उनसे जमकर लड़ाई हुई है। रोती जाती थी और कहती जाती थी, आपकी वजह से लड़का घर से गया है। बेचारा थाली पर से भूखा उठकर चला गया उसे कुछ हो

गया, तो मैं जिंदगी भर आपका मुंह नहीं देखुंगी।''[27]

इस प्रकार अपनी मां के बारे में सुनने के बाद गोविंद और उसकी मां के बीच की दीवार गीरती है।

2.6.9 गोद लेने की रस्म से परेशान परिवार

'कोख का दर्प' कहानी में चित्रित कुम्मी को अचानक अपनी कामवाली के कारण अपने परिवार की भी गोद लेने की रस्म के कारण कैसी हालत हुई थी इसकी याद आती है। कुम्मी के परिवार में मां-बाबूजी और ये पांच भाई-बहन थें। कुम्मी की बुआ बहुत अमीर थी पर उसके घर औलाद न होने के कारण वह अपने भाई के बच्चे को गोद लेना चाहती है। यह बात जब मां को मालूम होती है तो वह अपने पांचों बच्चों को आंचल में छुपाकर इससे इंकार कर देती है। बाबूजी अपने घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण एक बेटे को तो अच्छी परवरिश मिलेगी इसके लिए मां की मर्जी के खिलाफ किशु को गोद देते हैं। इससे मां हमेशा अपने बेटे के लिए तरसती दिखाई देती है। मां की उस हालत को कुम्मी ने बहुत नजदीक से देखा था। एक दिन किशोर अचानक कुम्मी को मिलने के लिए उसके घर आ जाता है। तो वह अपने मां-बाबूजी की बूरी हालत का बयान करती है तो किशोर कहता है, ''क्या सिर्फ जन्म देने से ही कोई हकदार हो जाता है ? उसने तड़प कर पूछा उस दिन यह बात क्यों याद नहीं आयी जब मुझे एक घर से उखाड़ कर दूसरे के आंगन में फेंक दिया था ? अपने घर में मेरा रहने का हक भी जिन लोगों ने छिन लिया था, आज उन्हें अपने हक की बात करने का कोई अधिकार नहीं है दीदी।''[28] इस बात से स्पष्ट है कि बेटे के वियोग के कारण से यहां मां व्यतीत थी उसी कारण किशु को भी वहां घुट-घुटकर जीवन बिताना पड़ा था।

इस प्रकार गोद लेने की रस्म से परेशान परिवार की हालत स्पष्ट होती है।

2.7 अंतिम संक्षेप

मालती जोशी का यह कहानी संग्रह विकास पेपरबैक्स, दिल्ली - 110031 दूवारा प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण सन् - 1996 साल में प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह की पृष्ठ संख्या 131 है। इस कहानी संग्रह की कीमत 65 रुपए है। इस कहानी संग्रह में आठ कहानियां हैं। इस कहानी संग्रह की जादातर कहानियों में 'बूढ़ापे की समस्या' का चित्रण किया है। जिसमें 'अंतिम संक्षेप', 'क्षरण', 'मान-अपमान', 'छीना हुआ सुख', 'अपने-अपने दायरें' और 'सन्नाटा ही सन्नाटा' इन कहानियों का समावेश होता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी के बीच अनबन की समस्या 'मोहभंग' कहानी में तो विधवा की समस्या का चित्रण 'अतिक्रमण' कहानी में हुआ है।

2.7.1 पति-पत्नी के झगड़े में आरोपित मां

'अंतिम संक्षेप' शीर्षक कहानी में चित्रित मां अपने घर में अकेली रहती है। उन्हें सिर्फ दो बेटे हैं। एक बेटा विदेश में और दूसरा उसी शहर में अलग गृहस्थी बसाए हुए है। मनीष अपनी बीवी और दो बच्चों के साथ वहां रहता है। महिमा अपने ससूर के कारण अपना अलग घर बसा लेती है। पर मां अकेली होने के कारण वह अपने घर में किराएदार रख लेती है। पूजा और उसका परिवार उसमें रहता है। पूजा बातुनी और अच्छे स्वभाव की होने के कारण मां उसके छोटे बच्चों की परवरिश का जिम्मा अपने ऊपर लेती है। क्योंकि उन्हें कभी अपने पोता-पोती को संभालने का मौका ही नहीं मिला। मां का पूजा के प्रति प्यार भी महिमा को फूटी आंख नहीं सुहाता। महिमा और मनीष में हमेशा झगड़ा होता था और मनीष झगड़े के बाद अपनी मां के पास चला आता था। यह बात महिमा को अच्छी नहीं लगती। मनीष को अलग गृहस्थी बसाने का कोई मोह नहीं था पर बीवी के कारण उसे मजबूर होना पड़ा। एक दिन ऐसे ही मनीष अपनी बीवी से झगड़ा कर मां के पास आता है। इसी बात को लेकर महिमा और मां के बीच झगड़ा होता है और महिमा के उलाहने सुनकर और आपसी झगड़े में महिमा सारा दोष मां पर लगा देती है। यह सुनकर मां अपने घर के दरवाजे अपने बेटे मनीष के लिए हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देती है और महिमा से कहती है, "एक बात और। और यह आखरी बात है महिमा, पति ताले में बंद करके रखने की चीज नहीं है। उसे तो मन की डोर से बांधना पड़ता है। वह चाहे कहीं भी भटकता रहें बसेरे के लिए अपने ठिकाने पर ही लौट कर आता है।"[29]

इस प्रकार इस कहानी द्वारा मालती जोशी ने पति-पत्नी के बीच के झगड़े का चित्रण किया है। कहानीकार स्पष्ट करती है कि दांपत्य-जीवन में पति-पत्नी में समझौतावादी और एक-दूसरे को जानने की दृष्टि होनी चाहिए।

2.7.2 बहू और बेटे के कारण तनावग्रस्त मां

'क्षरण' शीर्षक कहानी में चित्रित विमलजी प्रधानाचार्या के पद से सेवानिवृत्त हो जाने के बाद अपने बेटे के घर में रहने चली आती है। बेटे के घर आने पर उन्हें एक-एक मुसीबत का सामना करना पड़ता है, पहले तो उनकी दोपहर की चाय बंद हो जाती है। उन्हें घर में अकेले ही पोतों के साथ रहना पड़ता है। घर की पार्टी में जब विमलजी अनेक प्रकार के व्यंजन बनाकर मनुहार करके सबको खिलाती है, यह बात भी उनकी बहू को अच्छी नहीं लगती। उनका नौकरों को खाना देने पर बहू उन पर गुस्सा होती है। वह जब अपनी बेटी ने भेजे हुए संत्रे पास पड़ोस में बांटती है तो बहू फोन करके अपनी ननंद से उनकी चुगली करती है। इस प्रकार जिंदगी भर अपने वसुलों पर चली विमलजी को अपने बेटे के घर में इस प्रकार अपमानों का

सामना करना पड़ता है, वह अपने आप को समझाती है, "वे रोएंगी नहीं। इस बार भी अपनी पीड़ा का समुद्र चुपचाप पी जाएंगी। अपनी टूटन किसी पर जाहिर नहीं होने देंगी। वे छोटे-छोटे दुःख उनके भीतर इस तरह रिसतें रहेंगे, और उनके साथ ही क्षार होती रहेंगी उनकी जिजीविषा।"[30]

इस प्रकार इस कहानी की विमलजी अपने बेटे और बहू के बर्ताव के कारण तनावग्रस्त जीवन यापन करती है। उन्हें हमेशा अपनी इच्छा-विचार का गला घोंटकर जीना पड़ता है। बूढ़ों को समझौता भरा जीवनयापन करना पड़ता है।

2.7.3 बेटे के बर्ताव से दुःखी मां

'मान-अपमान' शीर्षक कहानी में चित्रित मां को अचनाक एक दिन उनके घर में काम करनेवाली सहेली के समान आया मिल जाती है। वह उसे मिलकर अपनी पुरानी यादे ताजा करती है। किस प्रकार तलाक पाने के बाद अल्लारक्खी अपने भाई के कहने पर मां के घर आया का काम करने आ जाती है। उसने मुन्ने को ग्यारह साल तक छाती से लगाकर पाला था। इसके बाद मां उसे अपने घर ले आती है मां के डिप्टी बेटे का घर देखकर अल्लारक्खी के होश उड़ जाते हैं। मां खाने-पीने का प्रबंध कर बहू को बुलाती है। उनकी मॉडर्न बहू इस प्रकार अच्छी तरह से सज सवरकर आती है कि अल्लारक्खी देखती ही रह जाती है। मां बहू को अल्लारक्खी की पहचान अपनी सहेली के रूप में कराती है। इसी कारण बहू उनके चरण छुकर आशीर्वाद लेती है। इतना सबकुछ होने के बाद अल्लारक्खी को बहुत सी चीजों के साथ विदा किया जाता है। उनका बेटा उसी दिन घर वापस आता है और बहू के साथ बाहर जाने पर बहू उसे घर का सारा किस्सा सुनाती है, तो बेटा घर आकर अपनी मां से शिकायत करता है कि उसकी इतनी अमीर घर की पढ़ी-लिखी पत्नी को एक नौकरानी के पैर छूने के लिए कहा गया इसे स्पष्ट करते हुए बेटा कहता है, "तुम बात को समझती नहीं हो अम्मां! कम से कम यही सोच लिया करों कि तुम्हारी बहू कितने बड़े घर की बेटी है?"[31]

इस प्रकार जिसने उसे ग्यारह साल तक पाला उस मां के समान आया को अपनी बीवी के लिए अपमानीत करता है इससे उसकी विकृत मानसिकता स्पष्ट होती है। स्नेह, परोपकार, अपनापन जैसी भावनाएं अमीरी-गरीबी के पलड़े में तौलकर देखना अनुचित है।

2.7.4 अपनी इच्छाशक्ति से लाचार मां

'छीना हुआ सुख' शीर्षक कहानी में चित्रित आनु का पति डॉक्टर है। आनु के पति की बुआ उसके ही घर में रहती है। एक दिन आनु के चार तोले के कंगन कहीं खो जाते हैं पर वह अपने पति गुस्सा करेंगे इस

कारण चुप रहती है। फिर नौकर के जरिए उसे बुआ की असलीयत समझ में आती है। एक दिन अचानक जब बुआ अपनी बेटी बिन्नी के घर जाने का फैसला करती है तब उसका शक और भी बढ़ जाता है। बुआ जब अपनी सहेली से मिलने जाती है तब आनु चुपके से आकर बुआ की संदुक तलाशती है। उसमें उसे अनेक चीजों के साथ कंगन भी मिल जाते हैं, बाकी चीजें तो वह ठीक से रख देती है पर कंगन निकाल लेती है। बुआ के जाने के बाद आनु अपनी जासूसी अपने पति को सुनाती है तब वह गंभीर होकर उसे समझाता है कि किस प्रकार बुआ एक गरीब घर में ब्याही गई फिर उसके पति की मृत्यु हुई और उन्हें अपनी बेटी के साथ भाई के घर आश्रय लेना पड़ा। फिर वह अपनी पीड़ा कम करने के लिए अपना सारा गुस्सा बिन्नी पर उतारने लगी। बाबूजी को पहला दिल का दौरा पड़ने पर बुआ ने बिन्नी की शादी की जल्दी की तो पिताजी ने अपनी हैसीयत से कुछ बढ़कर ही खर्चा किया और हर चीज-त्यौहार को बिन्नी के मान-सम्मान मां ही करती रहीं। बुआ को कभी कुछ करने का मौका ही नहीं मिला। इसी मजबूरी के कारण उनकी अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छी अपूर्ण ही रही इसी इच्छी को पूरा करने के लिए वह घर की चीजें चुराकर अपनी बेटी को देती थी। ''यही तो उनकी मजबूरी है। वे बिटिया को भर-भर हाथों से देना चाहती है पर उनके पास तो कुछ है ही नहीं फिर ऐसे उल्टे सीधे काम करती है।''[32]

इस प्रकार बुआ की अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छी से वह लाचार दिखाई देती है। वह विवशतावश गलत काम करती है। वह बेटी को कुछ-न-कुछ देने का आनंद पाने की कोशिश में गलत काम एवं अपराध कर बैठती है।

2.7.5 सैद्धांतिक प्रतिबद्धता और दांपत्य जीवन

'मोहभंग' शीर्षक कहानी में चित्रित गिरीश और सुनीता पति-पत्नी हैं। दोनों अपने विचारों, सिद्धांतों, और अहं के कारण एक-दूसरे के विरोधी हो गए हैं। सुनीता नए विचारों के आधार पर चलनेवाली नारी है। वह अपनी दोनों बच्चियों को हॉस्टेल भेजती है और अपना खाली समय गरीब बच्चों को पढ़ाने में गुजारती है। उसे लगता है कि, हम अपने बच्चों को हॉस्टेल में रख सकते हैं। पर गरीब बच्चों को कौन पढ़ाएगा ? इसलिए वह उन्हें पढ़ाने के लिए जाती है। बाकी खाली समय वह अपनी कुतिया शेरी के साथ गुजारती है। गिरीश को यह बात पसंद नहीं आती उसे अपनी बेटियों को हॉस्टेल में भेजना पसंद नहीं है जब जाते वक्त लड़कियां उसे बिलखती हैं तो उसे बहुत बुरा लगता है। उसे अपने बच्चों के कपड़े भी गरीब बच्चों को देना पसंद नहीं क्योंकि उनके साथ अपने बच्चों की यादें जुड़ी हुई होती हैं, इस प्रकार दोनों के विचार और सिद्धांतों में अंतर होने के कारण ही दोनों के बीच तनावपूर्ण वातावरण निर्माण हुआ दिखाई देता है। ''मुझे

घर लौटने की इच्छा ही नहीं होती जरा भी अकेले हुए तो हम लोग बिना बात के लड़ पड़ते हैं। जो कहना चाहते हैं वह तो कह नहीं पाते। किसी तीसरी ही फालतू बात पर उलझ जातें हैं। मन की फांस मन में ही रह जाती है।"[33]

इस प्रकार दोनों के विचारों में अंतर होने के कारण दोनों में तनावपूर्ण वातावरण निर्माण हुआ दिखाई देता है।

2.7.6 बेटे और बहू के व्यवहार से आतंकित पिता

'अपने अपने दायरे' शीर्षक कहानी में एक अमीर घर की बेटी अपने पति के देहात के घर में अपनी सास की मृत्यु पर जाती है। वह घर उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। पुराने लोगों के रीति-रिवाज जैसी कोई भी बात उसे अच्छी नहीं लगती। बप्पा अपनी पत्नी की मृत्यु से दुःखी है। बप्पा की उम्र हो गई है और उनके दोनों लड़के अच्छी नौकरी पर होने पर जरूरत पड़ने पर उन्हें अपनी पत्नी के ही गहने बेचकर पत्नी का अंतिम-संस्कार करते हैं। पर बेटों को अपने पिता की हालत मालूम होने पर भी वे उन्हें पैसे की मदद नहीं करते। उल्टे मां के गहनों की पूछताछ करते हैं। पुष्पा और उसका पति बप्पा को अपने घर ले जाना चाहते हैं ताकि, "अपना सामान बांधते हुए पुष्पा ईश्वर को मना रही थी कि हे भगवान ! अब दुबारा यहां न आना पड़े। कम-से-कम गांव का शोक और सूतक उसे दुबारा न झेलना पड़े।"[34] योगेश जब बप्पा को पूछता है तो बप्पा अपनी पत्नी की याद में एक साल तक गांव में ही रहने का फैसला करते हैं। फिर अपने बेटे से कहते हैं कि बाद में अगर मैं मर भी गया तो मुझे दाग यही आकर देना। यह बात सुनकर उनकी अपनी बहू सोचती है, "मरने के बाद अगर इन्हें यहीं आना है तो जीते जी इनका भार कौन उठाएगा।"[35]

इस प्रकार बेटे और बहू के व्यवहार से आतंकित पिता का चित्रण इस कहानी में हुआ है। भौतिक सुख-सुविधा की लालसा और रिश्ते-नातों में उपस्थित उत्पन्न तनाव के कारण मनुष्य के बीच की खाई बढ़ रही है।

2.7.7 आर्थिक आभावों से संत्रस्त मां

'सन्नाटा ही सन्नाटा' शीर्षक कहानी के द्वारा सावित्री का चित्रण किया गया है। जिसका परिवार बहुत बड़ा है। उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण सावित्री को हमेशा आभावों का सामना करना पड़ता है। उसका बेटा नरेश फौज में नौकरी करता है और दिल्ली में ही अपने परिवार के साथ रहता है। छुट्टियों में सिर्फ वे लोग गांव में सावित्री के पास आते हैं। इससे सावित्री खुश हो जाती है, पर

जल्दी ही नरेश को फौज का बुलावा आता है और सावित्री को उसे जाने की इजाजत अपने दिल पर पत्थर रखकर देनी पड़ती है। पर बहू भी अपने पति के साथ जाने की जिद करती है क्योंकि उसे यहां बहुत काम करना पड़ता है। सावित्री अभी अपने पोता-पोती से न मिल पाने के कारण इससे इंकार करती है। सावित्री अपनी छोटी बेटी और बेटे को कभी कही भी जाने का मौका न मिलने के कारण उन्हें नरेश के पास दिल्ली भेजना चाहती है पर नरेश इससे हमेशा आना-कानी करता है। जब सावित्री अपनी बहू को नरेश से यह बात कहते सुनती है, "देखो मैं तुम्हारी हर बात मान लूंगी, पर मुझे यहां रहने के लिए मत कहना। तुम हर महीने यहां पांच सौ रुपया भेजते हो मैं कुछ नहीं कहती। चाहो तो सौ-पचास और भेज दिया करना। मैं मना नहीं करुंगी लेकिन बस्स..."[36] यह बात सुनकर सावित्री को बहुत बुरा लगता है उसे इच्छा होती है कि बहू को अभी जवाब दे, पर नरेश जो हर महीने पैसे भेजता था उससे उनके घर को बहुत सहारा मिलता था। इसी कारण सावित्री को अपना गुस्सा निगलकर बेटे और बहू को विदा करना पड़ता है।

इस प्रकार आर्थिक लाचारी के कारण उसे बहू की नफरत का भी स्वीकार करना पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक आभावों से संत्रस्त मां का चित्रण इस कहानी में दिखाई देता है।

2.7.8 ससुरालवालों से आतंकित बहू

'अतिक्रमण' शीर्षक कहानी में चित्रित वसुधा की शादी किशोर के साथ हो जाती है। किशोर के माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण, उसके घर में सिर्फ एक विधवा बुआ थी उसने अपना अधिकार उस घर पर स्थापित किया था। बुआ जवानी में ही विधवा हो जाने के कारण उनकी सारी इच्छाएं अपूर्ण रह गई थी और इसकी खलल हमेशा उनके मन में थी। वसुधा के साथ कभी उन्होने अच्छा व्यवहार नहीं किया। वसुधा का बनना-संवरना उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। घर में हमेशा वसुधा पर एक दबाव-सा दिखाई देता था। राहुल के पैदा हो जाने पर भी उसकी देखभाल के लिए हमेशा बुआ द्वारा वसुधा को ताने सुनने पड़ते हैं। किशोर की अचनाक मृत्यु हो जाने के बाद भी बुआ वसुधा का पीछा नहीं छोड़ती। जब उन्हें वसुधा की शादी की भनक लगती है तब वह कंगन भेज देती है, जब वक्त और अवसर पर कंगन न मिलने के कारण तथा अब उनकी अवश्यकता न होने के कारण वसुधा उन्हें स्वीकार नहीं करती। वसुधा अपनी दूसरी शादी तय कर अपना बेटा राहुल अपनी बहन को गोद देती है। तो बुआ अपना घर राहुल के नाम कर वसुधा की बहन और जीजाजी को अपने घर रहने बुलाती है तो वसुधा कहती है, "यहां राहुल के हक की चिंता किसी को नहीं है। बुआ की तो साजिश ही यह है कि हम लोग आजीवन उस मायावी बंधन में जकड़े रहें। उन्होने जिंदगी भर शासन किया है। खाली घर में वे नहीं रह सकती।"[37]

इस प्रकार वसुधा अपने ससुरालवालों से आतंकित दिखाई देती है। वह अपनी इच्छा और विचार से कुछ भी नहीं कर सकती। उसे अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं को भी दबाना पड़ता है।

2.8 एक सार्थक दिन

मालती जोशी का यह कहानी संग्रह साक्षी प्रकाशन, एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली - 110032 द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण सन् 1995 ई. में हुआ है। इस कहानी-संग्रह की पृष्ठ संख्या 144 है। इस कहानी संग्रह की कीमत 60 रु है। विषयों के आधार पर मालती जोशी की कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार करने का प्रयास किया है। 'एक सार्थक दिन' कहानी-संग्रह में 18 कहानियां है। बेरोजगारी से परेशान और अंत में मुक्ति का चित्रण 'एक सार्थक दिन' कहानी में हुआ है। शादी के बाद बदले हुए बेटी के रूप का चित्रण 'मेहमान' कहानी में तो डॉक्टर से पीड़ित परिवार का चित्रण 'पूजा के फूल' कहानी में हुआ है। सफाई के प्रति अत्यधिक अग्रह के कारण उत्पन्न स्थिति 'तौलिए' कहानी में तो पति-पत्नी के बीच तीसरे के प्रवेश से निर्मित समस्याओं का चित्रण 'रिश्ते' कहानी में हुआ है। ससुरालवालों और मायकेवालों के द्वारा उपेक्षित नारी का चित्रण 'साजिश' कहानी में तो अर्थाभाव के कारण बेटी को अपात्र के गले मढ़ने की लाचारी का चित्रण 'बोझ' कहानी में हुआ है। अपने भाई-बहनों के लिए कुर्बानी देनेवाली बहन का चित्रण 'अपराजीता' कहानी में हुआ है। प्रेम विवाह के कारण रिश्तों में उद्भूत दरारों का चित्रण 'विदा' कहानी में तो अनाथ बच्चे की जिम्मेदारी का चित्रण 'नए बंधन' कहानी में हुआ है। पति और ससुरालवालों से आतंकित बहू का चित्रण 'ऊब' कहानी में तो सपनों का टूटना, फिर नए जीवन की शुरुआत का चित्रण 'आरंभ' कहानी में हुआ है। विवाहपूर्व प्रेमी का लौट आना और पति की प्रतिक्रिया का चित्रण 'एक शहादत एक फलसफा' कहानी में हुआ है। अलमारी से जुड़ी यादों का चित्रण 'बिछोह' कहानी में तो संतान के बदलतें आचरण से संत्रस्त मां-बाप का चित्रण 'अनिकेत' और 'प्रतिष्ठा' कहानी में हुआ है। दहेज देने की काबिलियत न होने कारण अविवाहित नारी का चित्रण 'विकल्प' कहानी में तो अर्थ की कमी से संघर्षरत परिवार का चित्रण 'उधार की हंसी' कहानी में हुआ है।

आलोच्य संग्रह की कहानियों के कथ्य को प्रकाशित करने का यहा प्रयास रहा है।

2.8.1 बेरोजगारी से परेशान

'एक सार्थक दिन' कहानी में चित्रित दिलीप की पढ़ाई पूरी हो गई है। वह नौकरी की तलाश में है। नौकरी न मिलने के कारण उसे घरवालों की नाराजी का सामना करना पड़ता है। एक दिन दिलीप ऐसे

ही पिताजी के साथ लड़कर कटिंग कराने जाता है। वहां उसे एक मस्त मौला लड़का मिलता है, जो उसे बताता है कि आजकल पढ़े-लिखे लोगों के लिए ही नौकरी नहीं मिलती हम जैसे लोगों के लिए काम ही काम है। वह इतना ही नहीं कहता अपितु दिलीप को काम दिलाने के लिए भी ले जाता है। दिलीप भी घरवालों पर गुस्सा होकर दिन भर उस गॅरेज में काम करता है और शाम को मिली हुई कमाई से खुश होकर घर लौटता है। घरवाले भी उसकी ही राह देख रहे हैं। वह घर आकर खाना खाता है और साढ़े-आठ बजें ही उसे नींद आ जाती है। ''उसके मन में इस समय कोई कांटा नहीं था। वह अब थक कर सोना चाहता था। एक सार्थक दिन को इन निरर्थक कामों में खोने की उसकी इच्छी नहीं थी।''[38]

इस कहानी के द्वारा मालती जोशी ने स्पष्ट किया है कि पढ़े लखे युवकों की अपने दर्जे का काम न मिलने के कारण और अपनी हैसियत से हल्के दर्जे का काम करने में शर्म आने के कारण ही बेरोजगारी की समस्या निर्माण होती है। पर कहानी का नायक अपनी योग्यता से हल्के दर्जे का काम स्वीकार कर इस परेशानी से मुक्त हो जाता है।

2.8.2 शादी के बाद बदला हुआ बेटी का रूप

'मेहमान' कहानी में चित्रित हेम दो साल बाद अपने मायके आई है। इसी कारण मायके में सब लोग खुश हैं पर मां के लिए हेम के पास जरा भी समय नहीं है। वह हमेशा अपनी सहेलियों और भाभी के साथ घूमती रहती है। मां को ऐसा लगता है कि बेटी उसके पास आकर बैठे उससे अपने ससुरालवालों की बातें करें, अपनी मां की तबियत के बारे में पूछे। तब वह उसे अपनी तकलीफ बता सकें अपने घर के बारे में पूछे जो अब सिर्फ दो महीने के लिए उनका अपना है। घर में अपनी मां के साथ बेटा और बहू कैसा व्यवहार करते हैं, इसके बारे में पूछे पर हेम को अपनी मां की तरफ देखने के लिए भी समय नहीं है। ''अम्मां के लिए बाबूजी के लिए उसके पास एक मिनीट का समय नहीं है। एक तो ढेर सारी सहेलियां। उनसे समय बचेगा तो ननंद भौजाई कभी सिनेमा चली जाएंगी। कभी बाजार निकल जाएंगी छुट्टी के दिन तो भाई भी शामिल हो जाते हैं। उस दिन फिर लाल घाटी का प्रोग्राम बनता है या बिरला मंदिर का उनसे कोई झूठ-मूठ को भी नहीं पूछता सब जैसे मानकर चलें है कि वे नहीं आएंगी।''[39] फिर एक महीने के बाद हेम चली जाती है और मां का उसके साथ बात करने का आरमान धरा-का-धरा रह जाता है।

इस प्रकार शादी के बाद हेम का बदला हुआ बेटी का रूप दिखाई देता है। घर के काम-काज में व्यस्त मां उससे बातें करने के लिए तरसती है मगर बेटी के पास मां के लिए समय ही नहीं है। उसकी प्यार की भूख अधूरी रहती है। वह चाहकर भी अपनी इच्छी प्रकट नहीं कर पाती।

2.8.3 डॉक्टर से पीड़ित परिवार

'पूजा के फूल' कहानी में चित्रित सुरेश और उमा पति-पत्नी हैं। उमा बीमार होने के कारण उसे हमेशा डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। पर अस्पताल में होनेवाली बातें जैसे की मरीज की हैसियत के अनुसार मरीज के साथ किया जानेवाला व्यवहार देखकर वह दुःखी-परेशान होती है। उमा की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसे भी अनेक प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसलिए वह डॉक्टर के पास जाने के लिए आनाकानी करती है। इसी बात से सुरेश और उसके बीच अनबन होती है। जब एक दिन उमा को इंजेक्शन लगाने आए डॉक्टर असलम जब बहुत कोशिश करने पर भी उसकी नस में इंजेक्शन नहीं लगा सकते तो वह उसके पैसे भी नहीं लेते और चले जाते हैं। इस प्रकार से ईमानदार डॉक्टर ने न लिए हुए रुपयों की तरफ देखकर सुरेश उमा से कहता है, "उमा मैं कागज़ के इन टुकड़ों में बसी इंसानियत की महक को सहेजना चाहता हूं। और सचमुच उन्होंने वे रुपए उठाकर माथे से यूं लगा लिए जैसे पूजा के फूल हों।"[40]

आज डॉक्टरी पेशा नहीं अधिक-से-अधिक पैसे कमाने का धंधा बन गया है। अमानवीय व्यवहार और शोषण इसकी पहचान बन गई है।

2.8.4 सफाई का अत्यधिक मोह

'तौलिए' कहानी में चित्रित कुमुद एक साधारण से परिवार में पली-बढ़ी है। पति अमीर और सब सुख-सुविधाओं से युक्त घर मिल जाने के कारण उस पर साफ-सफाई का भूत संवार हो जाता है। वह हर वक्त घर की सफाई में ही लगी रहती है। यहां तक की पार्टी में या महमानों के घर जाने पर भी वह वहां का पानी भी नहीं पीती; इसी कारण से हमेशा उसमें और उसके पति के बीच झगड़ा होता है। पर कितना भी समझाने पर भी वह बाज नहीं आती। एक दिन जब सुशी को देखने के लिए जो लोग आते थे उनमें बच्चे भी थे और बच्चों के कारण घर गंदा हो गया था। दीदी (कुमुद) मेहमानों को सिर्फ दरवाजे तक ही छोड़ने गई थी उसके तुरंत बाद उन्होंने कमरे की सफाई शुरू कर दी थी। मेहमानों में से एक औरत अपना पर्स लेने के लिए वापस आती है तो वह इस प्रकार की साफ-सफाई देखकर आश्चर्य चकित हो जाती है। "उफ् उसके बाद क्या हंगामा हुआ है। जीजाजी दो घंटे तक पागलों की तरह चीखते रहें ये घर के दरोदीवार भी जैसे उनके गुस्से से दहल उठे थे। मैं तो उनके सामने पड़ी ही नहीं। दिनभर अपने कमरे में दुबकी इस घटना के संभावित परिणाम की कल्पना करती रही। शाम को, पूरे पांच घंटे के बाद मैं उतरी। देखा, बरामदे में इत्मीनान से बैठी दीदी धोबी को कपड़े गिनवा रही हैं।"[41]

इस प्रकार इतना सबकुछ होने पर भी कुमुद पर कोई असर नहीं होता। उसका अत्यधिक सफाई का मोह अन्य लोगों के लिए कष्ट-यातना का विषय बन जाता है।

2.8.5 पति-पत्नी के बीच तीसरे का प्रवेश

'रिश्ते' कहानी में अंकित मीरा, महेश और उनके दो बच्चे ऐसा परिवार है। मीरा के घर के पास ही मेहता रहता है, जो महेश का अच्छा दोस्त है। मेहता का परिवार चंदीगड़ में होने के कारण मेहता हमेशा खाने के लिए महेश के यहां आता है। एक दिन मीरा, मेहता को औपचारिकता वश एक बात कह जाती है, तो महेश हमेशा उसे उसी पर खिजाता है। मेहता की बीवी आनेवाली है इसलिए मीरा और मेहता जाकर घर का सारा सामान खरीदते हैं और घर भी सजाते हैं। मेहता की बीवी के आ जाने पर इनके घर में झांकता भी नहीं तीसरे दिन जब मेहता और उसकी बीवी मीरा के घर आती है तो उसका अमीरी बर्ताव देखकर मीरा को गुस्सा आ जाता है। मेहता की बीवी नौकरी करने के कारण उसमें ईर्ष्या दिखाई देती है और मीरा को इसी बात से गुस्सा आता है। फिर मेहता की बीवी चली जाती है तब मेहता मीरा के घर आने लगता है, उस वक्त मीरा उसकी तरफ ध्यान नहीं देती। महेश द्वारा बहुत दिनों के बाद मेहता अपने परिवार से मिल पाने की बात सुनकर मीरा कहती है, "वह भूल गई की बेचारा मेहता पिछले दिनों कितना पराया हो गया था। उसने सहन भाव से यह स्वीकार कर लिया कि मुश्किल से चार दिन उसे परिवार का सुख मिलता है, उसे किसी के साथ बांटना नहीं चाहता तो यह स्वाभाविक ही है।"[42]

2.8.6 ससुराल और मायकेवालों के द्वारा उपेक्षित नारी

'साजिश' कहानी में चित्रित पम्मी और उसके पति तथा ससुराल के अन्य लोगों का हमेशा झगड़ा होता था। इससे परेशान होकर पम्मी अपने मायके चली आया करती थी। मायके में भी परिवार बड़ा और कमानेवाला एक ही होने के कारण पम्मी का आना उन्हें बहुत मंहगा पड़ता था क्योंकि उसे विदा करते समय उसके साथ बहुत सारा सामान भेजना पड़ता था। एक दिन जब निम्मी को देखने के लिए कुछ लोग आते हैं तो एकदम ही रोती हुई पम्मी वहां आ जाती है, और सारे किए कराए पर पानी फेर जाता है। इससे सब लोग पम्मी पर नाराज हो जाते हैं। उससे कोई बात भी नहीं करता इससे तंग आकर वह घरवालों से इसका कारण पूछती है तो भाई उस पर टूट पड़ता है न कहनेवाली बातें भी सुनाता है। इससे दुःखी होकर पम्मी बाबूजी की तरफ देखती है तो बाबूजी कहते हैं, " 'सब सुन रहा हूं बेटे', बाबूजी ने उसी तरह छत की ओर निर्निमेष देखते हुए कहा, 'पर सच बात तो यह है बेटा, कि अब तुम्हारे बाप का घर कहां रहा। सब तो चुक गया।

पेंशन जो मिलती है, वह दवाइयों के लिए ही पूरी नहीं पड़ती। बेटे के भरोसे पर जी रहा हूं। अपनी लंबी-चौड़ी गृहस्थी उसके गले मढ़कर बैठ गया हूं। उसका बोझ और कितना बढ़ाऊं ?' "[43] यह सुनकर पम्मी को लगता है कि जैसे बाबूजी ने भी उसे पराया कर दिया। इसके बाद बाबूजी उसके भविष्य के बारे में न सोचकर उसे अपने ससुराल छोड़ आते हैं।

इस प्रकार पम्मी को न ससुरालवालों से और न मायकेवालों से सहानुभूति, आदार, अपनापन, सहायता मिलती है।

2.8.7 अर्थाभाव के कारण बेटी को अपात्र के गले मढ़ने की लाचारी

'बोझ' कहानी में चित्रित नीरू की बड़ी बहन ससुरालवालों के अत्याचार के कारण मर जाती है। तो उसके बच्चों की जिम्मेदारी नीरू के परिवारवालों पर आती है। नीरू का परिवार भी बड़ा है उसके बाद उसकी दो छोटी बहने हैं। एक दिन जब नीरू नौकरी से लौटती है तो घर का वातावरण उसे गंभीर दिखाई देता है। फिर उसे पता चलता है कि जीजाजी अब दूसरी शादी कर रहें हैं। यह बात सुनकर उसे ऐसा लगता है जैसे उसके कानों में किसीने गरम तेल डाल दिया हो। यह बात सुनकर उसे पिछली बाते याद आती है जब वह दोनों बच्चों को छोड़ने के लिए जीजाजी के घर अपने बाबूजी के सथ गई थी। तो जीजाजी ने बच्चों को लेने से इंकार कर दिया और उनकी मां ने नीरू को बहू बनाने का प्रस्ताव सामने रखा था, तो कितना गुस्सा आया था नीरू को और जीजाजी ने भी इसमें अपनी सहमती दी थी। जब रात को मां जीजाजी को दूसरी शादी करने पर गालियां दे रही थी तो बाबूजी मां को बता देते हैं कि वे लोग नीरू के बारे में भी पूछ रहें थे। यह बात सुनकर मां एकदम से कहती है कि आपने इस रिश्तें से मना क्यों कर दिया, "बेवकूफी इसमें क्या है जी ठीक ही तो कहती रही हूं। क्या खोट है जगदीश में ? जाना पहचाना है तहसीलदार है। नौकर-चाकर हैं, पैसा टका है और क्या ढूंढ़ते हैं हम। उम्र थोड़ी ज्यादा है पर अब सभी कुछ तो मिल नहीं सकता।"[44] इस प्रकार अपनी दीदी के हत्यारे आदमी के साथ मां अपनी आर्थिक लाचारी के कारण मेरी शादी करने के लिए तैयार है यह बात सुनकर नीरू फूट-फूट कर रोने लगती है।

2.8.8 अपने भाई-बहनों के लिए कुर्बानी देनेवाली बहन

'अपराजीता' कहानी में लेखिका की छोटी बहन की सहेली अंजू का चित्रण है। अंजू का परिवार गरीब था और घर में भाई-बहनों की संख्या बहुत थी। अंजू बचपन से ही अपनी विचित्र मानसिकता के कारण दूसरों पर शाब्दीक वार करने का मौका खाली नहीं जाने देती थी। हमेशा वह लेखिका की छोटी बहन पम्मी को चिढ़ाती रहती थी। अंजू का एक ही फिरका पम्मी के सारे किए कराए पर पानी फेर देता था।

लेकिन जब अंजू को लेखिका के द्वारा पम्मी के बारे में पता चलता है तो अंजू पम्मी के साथ तुलना नहीं करना चाहती। इसका उत्तर देते हुए अंजू कहती है कि हमारे मां-बाप ने हमें सिर्फ जन्म दिया है। हमारे भविष्य के बारे में नहीं सोचा इसलिए वह खुद नौकरी करके छोटे चार भाई-बहनों को पढ़ा रही है और बड़ी बहनों की शादी भी उसी ने की है। इतना सबकुछ करने पर भी उसकी मां उसकी शादी के बारे में नहीं सोचती इस प्रकार अपनी स्थिति का बयान करने पर लेखिका को अंजू के बारे में ऐसा लगता है, ''संसार को तुच्छ समझनेवाली, हमेशा अपने पर गर्व करनेवाली, अंजू के लिए मन में श्रद्धा जाग रही थी। लग रहा था यह उसका अधिकार है क्योंकि उसने विषम परस्थितियों के बीच से अपना रास्ता खुद बनाया है अपने साथ चार व्यक्तियों का निर्माण किया है - उसने दया की भीख को ठुकराकर हमेशा अपने कृतित्व का सहारा लिया है। सचमुच आज भी वह 'अपराजीता' है।''[45]

परिस्थिति के सामने न झुकनेवाली अंजू 'अपराजीता' है।

2.8.9 प्रेम विवाह के कारण रिश्तों में दरारें

'विदा' कहानी में चित्रित जगत और सुषमा की मुलाकात लेखिका के घर में हुई थी। फिर उनमें नजदीकियां बढ़ती गई। एक दिन वे दोनों उसके पास शादी की बात करने चले आए। यह बात सुनकर वह अपने पति के साथ सुषमा के घरवालों से बात करने चली जाती है। सुषमा के पिता इस रिश्तें से इंकार कर देते हैं। इससे नाराज होकर जगत और सुषमा भाग कर शादी करते हैं और इसीकारण सुषमा के घरवालें लेखिका के घर के साथ अपना रिश्ता तोड़ देते हैं। इससे उसे बहुत दुःख होता है। एक दिन जब सुषमा और जगत पहली बार उनके घर आनेवाले हैं उस दिन सुषमा की मां चुपके से आकर उसे सुषमा की झोली में सुपारी-चावल डालने के लिए कहती है। ''इतनी-सी बात मुझ बुढ़ीया की रख लो बिटिया घर-वर तो जिसके भाग्य में होता है वहीं मिलता है। पर कन्या तो कन्या ही रहती है। उसे कभी भी सूने विदाई नहीं देनी चाहिए, अशुभ होता है। फिर आज वह पहली बार पीहर आ रही है। अपने भाई-भाभी के घर आ रही है। करोगी न इतना काम ?''[46]

इस प्रकार प्रेम-विवाह के कारण रिश्तों में दरारे पड़ती हैं, और एक मां को इस प्रकार दूसरों के जरिए अपनी बेटी को 'विदा' करना पड़ता है।

2.8.10 अनाथ बच्चें की जिम्मेदारी

'नए बंधन' कहानी में वर्णित संतोष को अचानक एक पोस्टकार्ड मिलता है। जिसमें रमा याने उसकी बीवी ने उसे फौरन बुलाया था। इतने दिनों तक संतोष परेशान था क्योंकि जब रमा राखी के लिए

अपने भाई के पास गई हुई थी। तब उसी गांव में बाढ़ आ गई थी और सारा गांव बाढ़ में बह गया था। उसके कितना भी ढूंढ़ने पर भी रमा का पता नहीं चला था। फिर वह खुद वहां गया तो बह जाने वालों की सूची में रमा का नाम भी था। इससे वह और भी परेशान हो गया था फिर अब रमा का पत्र मिलने पर वह अस्पताल में उसे लेने पहुंच जाता है। अस्पताल में रमा को देखकर उसे चैन मिलता है। फिर रमा के पास उसे एक छोटी बच्ची दिखाई देती है। जिसकी मां बच्ची को रमा की गोद में देकर पानी में बह गई थी। रमा खुद निसंतान होने क़े कारण उस बच्ची को अपनाना चाहती है। संतोष को यह बात अच्छी नहीं लगती फिर भी वह रमा की जिद की खातिर बच्ची को अपने साथ लेकर जाता है। लेकिन अपने घर शाम बच्ची को सोई हुई देखकर वह उस पर भा जाता है, और सबेरे रमा देखती है कि "सुबह दूधवाले की आवाज पर रमा की आंख खुली। देखा, बच्ची संतोष की बगल में लेटी हुई है। उसके नन्हें-नन्हें हाथों का घेरा संतोष के गले में है और संतोष का मजबूत हाथ उसकी पीठ पर बड़ी ममता से टिका हुआ है।"[47]

इस प्रकार संतोष पहले तो उस अनाथ बच्ची से नफरत करता था पर अंत में उसे अपनाता है। वह 'नए बंधन' से खुश होता है।

2.8.11 पति और ससुरालवालों से आतंकित बहू

'ऊब' कहानी में चित्रित सुमन का पति दूसरे शहर में नौकरी करता है और वहीं रहता है। इसी कारण घर में सुमन को अनेक तकलिफों का सामना करना पड़ता है। पति घर में न होने के कारण सास और ननंद उसे बहुत परेशान करती हैं। सारे घर का काम उसी को करना पड़ता है, ऊपर से ताने भी सुनने पड़ते है। पहले ननंदों की शादी के लिए और अब देवर की पढ़ाई के लिए नरेश शहर में रहता है पर उसे घर पैसे भेजने पड़ते हैं। इसलिए वह अपनी पत्नी सुमन को शहर नहीं ले जा सकता। इतनाही नहीं तो जब नरेश छुट्टियों में घर आता है तो सुमन की सास-ननंद उसके खिलाफ नरेश को भड़काती हैं और इसीसे झगड़ा शुरू हो जाता है। इस प्रकार घर की रोज की झंझटों से सुमन इतनी परेशान हो जाती है कि नरेश की चिट्ठी पढ़ने की भी उसकी इच्छा नहीं होती सबेरे मिली हुई चिट्ठी की याद उसे तब आती है जब ननंद रात को चिट्ठी लाकर देती है। "पत्र हाथ में लेकर बड़ी देर तक सुन्न होकर बैठी रहीं ! कैसी होती जा रही है वह, दिन भर उसे चिट्ठी पढ़ने की याद ही न आई। पहले क्या वह क्षणभर भी रुक पाती थी। पत्र हाथ में आते ही कमरे में भाग आती थी वह रसोई में होती तो आटा सने हाथों से ही खोल लेती तब कोई न कोई दया करके उसे उतनी देर की छुट्टी दे ही देता।"[48] इस प्रकार यहां शारीरिक दूरी के कारण मानसिक दूरी भी दिखाई देती है।

पति और ससुरालवालों से पीड़ित सुमन दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन से 'ऊब' गई है।

14495

2.8.12 सपनों का टूटना - फिर नए जीवन की शुरुआत

'आरंभ' कहानी में चित्रित विभा और सुरेश पति-पत्नी हैं। शादी के कुछ दिनों के बाद विभा और सुरेश एक दिन बॉस द्वारा आयोजित पार्टी में जाते हैं। वहां विभा अपनी पुरानी सहेली बॉस की बीवी के रूप में मिलती है। उसे देखकर विभा बहुत नाराज हो जाती है। उसे लगता है कि रंजना जैसी बेवकूफ साधारण-सी लड़की को इतना बड़ा घर, अमीर पति मिला पर अपनी किस्मत में तो बस जूते चटखाना ही लिखा है। ससुराल हो या पिहर। यह बात सुनकर सुरेश को ऐसा लगता है कि अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विभा ऐसी बात कह रही है। इसके बाद उसे अपनी शादी के पहले की बातें याद आती है। किस प्रकार उसे कोई भी लड़की पसंद नहीं आती थी। किस प्रकार इतनी लड़कियों के इंकार करने के कारण घरवाले उस पर नाराज हुए थे। लेकिन उसे अपने स्वप्नों की रानी से ही शादी करनी थी। आखिर एक दिन दिवाकर की बातें सुनकर उसे अपने-आप पर शर्म आती है, और वह विभा को पसंद करता है। विभा को देखकर तो घरवालें नाराज हो जाते हैं। सुरेश के खातिर उन्हें विभा को अपनाना पड़ता है, और ऐसी लड़की का अपने पति और ससुराल के प्रति नाराजी व्यक्त करना सुरेश को अच्छा नहीं लगता। एक दिन विभा ड्रेसिंग टेबल लाने की बात करती है तो सुरेश अपने जैसे क्लर्क के घर में ड्रेसिंग टेबल शोभा न देने की बात करता है, और कहता है, "मैने एक बार कह दिया न। मैं वहीं चीजें लाता हूं जो मेरी झोपड़ी में शोभा देती है। बीवी का चुनाव भी मैंने इसी दृष्टिकोन से किया है।"[49] तो यह बात विभा अपने दिल से लगा लेती है। फिर सुरेश उसे फिल्म दिखाने ले जाता है, और इस प्रकार दोनों का झगड़ा खत्म होता है। एक नए उत्साह के साथ उनकी गृहस्थी का आरंभ शुरू हो जाता है।

2.8.13 विवाह पूर्व प्रेमी का लौट आना और पति की प्रतिक्रिया

'एक शहादत एक फलसफा' कहानी में चित्रित अनिल और रजनी पति-पत्नी हैं। यह शादी अनिल की मर्जी के खिलाफ होने के कारण अनिल अपनी पत्नी की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देता। एक दिन अचानकर अनिल को शकुन दिखाई देती है जिससे वह बहुत प्यार करता था। शकुन अनिल से अपने पति और बेटी की पहचान करा देती है। शकुन को अपने पति के साथ इतना खुश देखकर अनिल को गुस्सा आता है। उसे वह सारी बातें याद आती हैं कि किस प्रकार शकुन उससे प्यार करती थी, घरवालों के दबाव में आकर उसने कैसे कौशल से शादी कर ली और अनिल को भी अपनी मां के दबाव में आकर रजनी से शादी करनी पड़ी पर अनिल का रजनी के साथ रिश्ता सिर्फ, "दरअसल वह रजनी को पत्नी के रूप में नहीं मां की बहू के रूप में ब्याह लाया था और इसी तरह निभा भी रहा था। सब कुछ जैसे मात्र कर्तव्य हो।"[50]

फिर और एक बार अनिल को शकुन रास्तें में मिल जाती है तो वह अपनी नाराजी व्यक्त करता है। तब वह कहती है कि पुरानी बातों को याद रखने से तकलीफ ही होती है। अपने दुःख को भूलकर अपनी जिंदगी जीनी पड़ती है और कौशल को देखकर कहती है "इन्हें देखो अनिल इन सब बातों में इनका क्या दोष है ? फिर इनके जीवन में विष घोलने का मुझे क्या अधिकार है ?"[51] इस प्रकार शकुन की बातें सुनकर अनिल भी अपने प्यार को भूलकर रजनी के साथ नए जीवन की शुरुआत करता है।

आलोच्य कहानी के द्वारा लेखिका स्पष्ट करती है कि प्राप्त परिस्थिति को स्वीकार कर जीना चाहिए तब ही संतोष या सुख की प्राप्ति संभव है।

2.8.14 अलमारी से जुड़ी यादें

'बिछोह' कहानी में वर्णित विजय जब एक दिन दफ्तर जाने के लिए निकलता है तो सुधा उसे अपनी पुरानी अलमारी के बारे में पूछती है। तो वह अलमारी दिखाने के लिए कहता है और जल्दी से स्कूटर पर बैठकर चला जाता है। दफ्तर में काम करते वक्त वह सोचने लगता है कि अलमारी के नक्शीदार पल्लें कैसे दिखने में तो सुंदर है पर उन्हें हमेशा साफ रखना पड़ता है। किस प्रकार अम्मां हमेशा अलमारी के बारे में बताती थी की वह बाबूजी की पहली कमाई से आई हुई थी, उस दिन वह बाबूजी पर बहुत गुस्सा हुई थी उन्हें मनाते हुए बाबूजी ने कहा था कि इस बार माफ कर दो यह अलमारी तुम्हारे गहनों और कपड़ों से भर दूंगा। फिर उसे सुधा का फोन आता है तो वह अलमारी बेचने के लिए कहता है। फिर सोचने लगता है कि किस प्रकार अम्मां की साड़ियों की खुशबू उस अलमारी से आती थी। जब तक अम्मां रही उस अलमारी की तरफ देखने की भी किसी की हिम्मत नहीं हुई। अम्मां के जाने के बाद किस तरह से उन्होने उसे बेचने का उपक्रम उठाया है। फिर शाम को जब अनिल घर आता है, तो उसे अपना घर सुना-सुना लगता है अलमारी के बिना अपने घर को देखकर उसे उस दिन की याद आती है जब उसने अपनी मां की चिता को आग दी थी। यह महसूस होने के बाद वह जोर से चिखता है तो सुधा अलमारी बरामदे में होने की सूचना देती है। बरामदे में अलमारी के पास जाकर उसे ऐसा लगता है, "वहां एक कोने में वह अलमारी खड़ी थी। असहाय-सी अनादृत सी उसके दोनों पल्ले खुले हुए थे और हवा में धीरे-धीरे कांप रहे थे। उसे लगा जैसे अम्मां ही उसे अपने अंक में भर लेने को व्याकुल है। वह झिझकता-सा पास जा खड़ा हुआ। फिर उसने बेतरतीब फैलें हुए कटे-कटे अखबार के कागजों पर अपना सिर रख दिया। स्मृतियों में बसी अम्मां की साड़ियों की परिचित गंध धीरे-धीरे उसके नथुनों में भरने लगी और वह फफककर रो पड़ा।"[52] इस प्रकार अनिल की पुरानी अलमारी के साथ जुड़ी यादें दिखाई देती है। उसी प्रकार जड़-चेतन के साथ मनुष्य का

अतीत जुड़ा हुआ होता है, सुख-दुःख के समय वह उसे याद आता है। उसका 'बिछोह' उसे काटने को दौड़ता है।

2.8.15 संतान के बदलते आचरण से संत्रस्त मां-बाप

'अनिकेत' कहानी में चित्रित अम्मां-बाबूजी अपने छोटे बेटे के पास रहते हैं, पर उस घर में उन्हें अपनी मर्जी से कुछ करने की इजाजत बिल्कुल नहीं है। अम्मां जब नौकरों की शिकायत लेकर अपनी पढ़ी-लिखी बहू के पास जाती है तो उल्टे बहू उन्हें नौकर-चाकर रखने की हैसियत न होने का ताना देती है। इससे गुस्सा होकर वह बाबूजी के पास आती है। आजकल उसके बेटे को भी उसका बना कुछ नहीं भाता वह भी यह काम नौकरों पर सौंपने के लिए कहता है। मां को लगता है कि कोई उनसे कुछ बनाने की फर्माइश करें, पर ऐसा मौका आता ही नहीं। उनकी बहू को तो बेटे को 'छुट्टन' कहकर बुलाना भी पसंद नहीं है। उनके बड़े बेटे के घर में पति-पत्नी दोनों नौकरी करने के कारण हमेशा भागदौड़ मची रहती है। एक दिन जब बड़ा बेटा अपनी पत्नी को अम्मां पर रसोई का भार सौंपने को कहता है तब बड़ी बहू शिकायत करती है कि अम्मा महीने का राशन पंद्रह दिनों में खत्म कर देंगी। इसी कारण अम्मां-बाबूजी को अपने दोनों बेटों के घर सुख नहीं मिलता अपने पुराने घर में जाकर रहें तो बेटों को वहां बार-बार आने से तकलीफ होती है। जब बाबूजी देवव्रत से अपनी बेटी शकुन को बुलाने की इच्छा व्यक्त करते हैं तो वह उसकी साली यहां होने का और गेस्ट रूम बनने की देरी का बहाना बनाता है तो अम्मां सोचती है कि जब छोटा था तब छोटे से कमरे में सब लोग सोते थे अब नीचे सोने में इसकी शान चली जाती है। इस प्रकार अपनी हालात देखकर बाबूजी को लगता है, "शकुन की अम्मां ठीक ही तो कहती है। बेघर हो गए हैं हम तभी तो मारें मारें फिर रहे हैं। जिसने जहां लुढ़का दिया वहीं चले गए। अपनी कोई इच्छा ही नहीं है।"[53] इस प्रकार संतती के बदलते आचरण से संत्रस्त मां-बाप का चित्रण अनिकेत कहानी में किया है।

'प्रतिष्ठा' कहानी एक ऐसे परिवार का चित्रण करती है जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। कम्मों एक दिन अपनी भाभी के लिए साड़ी खरीदने अपने भैया के साथ जाती है। साड़ी खरीदने के लिए दिए हुए दो सौ रुपए के कारण भैया बहुत नाराज होते हैं। घर आकर वह अम्मां पर गुस्सा होते हैं कि उसकी इतनी अमीर और पढ़ी-लिखी बीवी के लिए सिर्फ दो सौ रुपए की साड़ी खरीदी गई। इसके साथ ही अब भैया को दूसरों के घर बाबूजी का पूजा पर जाना पसंद नहीं है। जिस पूजा से ही वह इतना बड़ा और पढ़ा-लिखा हो गया है। लेकिन उसे ऐसा लगता है कि बाबूजी को दूसरों के घर पूजा करने पर उसकी इज्जत कम होती है। इसके बाद वह अपने कमरे में चला जाता है। उसे अपनी बीवी को लेकर पुराने घर में रहना मंजुर नहीं है।

इसलिए वह पास ही गेस्ट हाऊस में रहता है। साड़ी के लिए रुपए देने के कारण भैया झगड़ा करके निकल जाता है तो वहां भाभी आ जाती है। भाभी खुद बाबूजी के झोले में पूजा का सामान भरकर उन्हें पूजा पर जाने के लिए कहती है। अम्मां से पूछकर वह नई वाली साड़ी पहनती है। फिर भैया को भी पूजा में जाने के लिए तैयार करती है तब वह अपने पति से कहती है, "देखो प्लीज आज मना मत करना, तुम्हें हमारी कसम है। सोचो तो आज अगर हम लोग न गए तो चार लोगों के बीच अम्मां-बाबूजी की क्या साख रह जाएगी। अपने घर हम अपनी मर्जी से जीते ही है। यहां आकर अगर सब का मन न रख सके तो आने का अर्थ ही क्या हुआ ?"[54] इस प्रकार भैया का अपने अम्मां-बाबूजी पर गुस्सा होना और भाभी का समझदारी के साथ बर्ताव करना इसके साथ ही कहानी समाप्त होती है। 'प्रतिष्ठा' का वास्तव अर्थ स्पष्ट होता है।

2.8.16 दहेज देने की काबिलियत न होने के कारण अविवाहित नारी

'विकल्प' कहानी में अंकित बबली जब खिड़की से बारात देखती है तो उसकी बड़ी बहन उस पर चिल्लाती है इसी कारण बाबूजी की नींद खुलकर बबली को डांट पड़ती है। बबली का चेहरा देखकर मां बाबूजी से कहती है कि अपने घर किसी की न सही तो दूसरों की बारात तो उसे देखने दो। इस बात पर बबली को लगता है कि झगड़ा होगा क्योंकि उसके घर में उसकी बड़ी दो बहने अविवाहित है। बाबूजी उनके दहेज की व्यवस्था न कर पाने के कारण उनकी शादी नहीं हो सकी बड़ी बहन अठाइस साल की है उसने एम्. ए., बी. एड. किया है और अब नौकरी करके अपने दहेज के लिए पूंजी जमा कर रही है। वह जल्दी हो इस हेतु अनेक प्रकार के व्रत रखती रहती है। दूसरी बहन बी. ए. तक अपनी पढ़ाई पूरी कर घर में बैठी है इसके लिए कई रिश्तें आए पर बड़ी बहन अविवाहित होने के कारण उसकी शादी नहीं हो पाई, वह अब अपनी भी उम्र हाथ से न निकल जाए इस बात से परेशान है और इसके लिए वह अनेक उपाय कर रही है। बबली के साथ ही जन्मे बबलू को घर में बहुत प्यार मिलता है क्योंकि वह लड़का है इसलिए। बबूल हमेशा पिक्चर जाता है मां-बाबूजी और सारे मेहमान उसी को प्यार करते हैं। बबली को बचपन से ही अचनाहे मेहमान की तरह सबकी अवहेलना ही सहनी पड़ती है। बबली के घर में हमेशा बड़ी दीदी की शादी की चिंता ही लगी रहती है। बी. एस्सी. फर्स्ट ईयर में पढ़ रही बबली भी अब शादी एवं अपने भविष्य के सपने देखने लगी है उन सपनों में भी अनजाने देश का राजकुमार आने लगा है। बारात देखकर उसके मन के आंगन में शहनाई बजने लगी है। पर बबली की तरफ देखने का किसी के पास समय नहीं है। वह सोचती है कि पहले बड़ी दीदी और बाद में छोटी दीदी और उसके बाद मेरा नंबर आएगा तब तक इस खाली समय में क्या करें, "बड़ी दीदी की तरह संन्यासिनी बनकर वर की प्रतिक्षा करें या छोटी दीदी की तरह उम्र को बांध

रखने के प्रयास में बुढ़ाती चली जाए ? तीसरा कोई विकल्प भी तो नहीं है।''[55] इस प्रकार दहेज की कमी के कारण गरीब घर की लड़कियों की शादी के लिए इस प्रकार इंतजार करना पड़ता है, उनके सपने टूट जाते हैं। जवानी बुढ़ापे में बदलने लगती है। उनके सामने कोई 'विकल्प' नहीं होता।

2.8.17 अर्थ की कमी से संघर्षरत परिवार

'उधार की हंसी' इस कहानी में रमा अपने बेटे के शर्ट का कपड़ा खरीदने जाती है, रमा का बेटा नवीन का जन्मदिन होने के कारण उसके बाबूजी उसे कपड़े लाने जानेवाले थे तब नवीन कॉलेज में होने के कारण अच्छे कपड़े की फरमाईश करता है और लाला की दुकान पर हमेशा पुराना स्टॉक होने के कारण वहां से कपड़े खरीदना वह नहीं चाहता। पर लाला के पास इन लोगों की उधारी होने के कारण पिताजी वहां से ही कपड़ा खरीदने के लिए कहते हैं। पिताजी के इतना कहकर चलें जाने पर नवीन बड़बड़ाने लगता है। तब रमा उस पर गुस्सा होती है। बाद में रमा बेटे की मजबूरी देखकर वह खुद कपड़ा खरीदने जाती है और नए फॅशन का नब्बे रुपए का कपड़ा खरीदती है। जब वह घर जाते हुए बस में बैठती है तो उसे मिसराजी चाची का राजू दिखाई देता है। राजू एक बहुत बढ़ीया स्वेटर पहने हुए है, और शान से बस में बैठा हुआ है। घर में बुझे-बुझे से रहने वाले राजू को यहां खिलखिलाकर हंसता हुआ देखकर उसे उस दिन की याद आती है जब उसे स्वेटर पहने देखकर रमाने मिसराजी से पूछा था तो उसने बताया था की राजू को उतरन पहनना बिल्कुल पसंद नहीं है कब से पड़ा हुआ था आज पहना है, और यह स्वेटर उसे मिसराजी जिस घर में काम करती है उन्होंने दिया है। फिर रमा को ऐसा लगता है कि राजू उसे बस में देखकर सहम जाएगा इसलिए रमा उस बस से उतर जाती है। बस स्टॉप पर उसके मन में विचार आने लगते हैं कि किस प्रकार बच्चे बड़े हो जाने पर उन्हें अपना घर या घर का कोई काम करने में शर्म आती है। फिर थोड़ी देर बाद दूसरी बस आती है उसमें भी अनेक कॉलेज के लड़के बैठे हुए होते हैं। अब रमा को ऐसा लगता है कि सब लड़के जैसे दिखते हैं वैसे नहीं है वह उनकी असलियत धीरे-धीरे जान जाती है। ''ये नीली पैंटवाला जरूर बॉलपेन के लिए बहन से झगड़ कर आया है। धारीदार कमीजवालें को जाते ही केरोसिन की लाईन में लगना है। तभी तो मुंह बना रहा है, सफेद स्वेटर वाला जानता है कि गैस खत्म हो गई है अब दो-तीन दिन सिर्फ दाल-भात पर गुजर करनी होगी। और ये कोट तो मुन्ना बड़े भाई का लग रहा है। और तुम्हारी ये पैंट ! दीदी छुपाकर दे गई थी न ! जीजाजी की है, उलटवाकर बनवाई है। और श्रीमान जी आज सुबह पापा से झड़प हो गई थी न !''[56] जब बस में रमा के पास बैठी महिला कॉलेज के लड़कों का शोर सुनकर गुस्सा होती है तो रमा कहती है कि हंसने दो बहन अभी नहीं हंसेगें तो उम्र भर हाय-हाय ही करनी है। पता नहीं इनकी हंसी अपनी है या उधार की ?

आज की दुनिया में 'उधार की हंसी' परजीवित है। दिखावा, झूठ, फरेब आज की दुनिया की पहचान बन गई है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कथ्य कहानी के मूल उपकरण के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। कहानी रचना का आधार होने के कारण भी इसका विशिष्ट स्थान है; देखा जाए तो कहानी की रचना में उसके सभी तत्व महत्त्वपूर्ण होते हैं, परंतु कथावस्तु के अभाव में उसकी संभावना नहीं होती। जिस प्रकार शरीर में ढांचे की अवश्यकता होती है उसी प्रकार कहानी में कथ्य का महत्त्व ढांचे के रूप में होता है।

मालती जोशी खुद एक घरेलू औरत होने के कारण उनके लेखन का विषय भी परिवार रहा है। जीवन की छोटी-छोटी अनुभूतियों को उन्होंने अपने लेखन द्वारा व्यक्त किया है।

मालती जोशी के 'आखिरी शर्त' कहानी-संग्रह में सात कहानियां है जिनका विषय इस प्रकार है - 'आखिरी शर्त' कहानी में आजकल की अपने आप को पढ़ी-लिखी समझनेवाली, आधुनिकता का समर्थन करनेवाली पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही गलत धारणाओं का अनुकरण करनेवाली महिलाओं का चित्रण किया है। 'शुभकामना' कहानी में आम आदमी के जीवन में पैसा ही महत्त्वपूर्ण है और इसी मजबूरी का फायदा लेकर आजकल के राजनेता एक इमानदार आदमी का इमान आसानी से खरीद सकते हैं। तो 'कोउ न जाननहार' कहानी में पहले जमाने में विधवा घरवालों पर बोझ बनती थी पर आज यह स्थिति है कि विधवा को खुद नौकरी करके घरवालों का पेट भरना पड़ता है, घरवाले भी अपनी जरूरते पूरी होने पर उसे अकेला छोड़ देते है। 'संवेदना' कहानी में मालती जोशी ने बेटी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। घर में बेटियों की शादी होने के कारण अपने-आपको अकेला महसूस करनेवाले मां-बाप फिर से एक बेटी ही गोद लेना चाहते हैं। 'साथी' कहानी के द्वारा तो ऐसे पति-पत्नी का चित्रण किया है जो हमेशा एक-दूसरे के साथ रहते है और बुढ़ापे में भी अपने साथी को अकेला छोड़ने की उनकी इच्छा भी नहीं होती। तो 'औकात' कहानी में आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण कुछ परिवार के बच्चों को रिश्तेंदारो तथा समाज में अपमानास्पद बर्ताव का शिकार होना पड़ता है। 'खेल खेल में' कहानी में बाल-लीलाओं का चित्रण किया है, जिसमें छोटे बच्चे किस प्रकार अपने माता-पिता का अनुकरण करते हैं इस बात को स्पष्ट किया है।

'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी-संग्रह की सभी कहानियां नारी पर केंद्रित दिखाई देती हैं। साथ ही मालती जोशी की कहानियों में विधवा नारी का चित्रण अलग ढंग से चित्रित किया है। 'सती' कहानी में आज की नारी विधवा पर होनेवाले अन्याय अत्याचार से भयभीत होकर अपना पति अगर मर गया तो विधवा का जीवन जीने की हिम्मत न होने के कारण पति की मृत्यु के पहले ही आत्महत्या कर लेती है। 'मेरी

रंग दी चुनरियां' कहानी के द्वारा ऐसे लोगों का चित्रण किया है जो अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए एक विधवा को जबरदस्ती अदालत में खड़ा कर देते है और उसे भी मजबूरी के कारण यह कार्य करना पड़ता है। अंत में वह इस बात से इंकार कर देती है। 'यातना चक्र' कहानी में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है जिसे कुरूप होने के कारण हमेशा रिश्तेदारों तथा समाज में अपमानास्पद बर्ताव का सामना करना पड़ता है। रिश्तेदारों के सामने उसका हमेशा प्रदर्शन ही भरता है इसी कारण उसे लाचारी का जीवन जीना पड़ता है। 'आखिरी सौगात' कहानी में ऐसे परिवार का चित्रिण किया है। जिसमें घर की बड़ी बेटी घर की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है पर उसकी मां उसे सिर्फ 'पैसे कमाने की मशीन' समझती है और अपने घर का खर्चा चलता रहें इसलिए सिर्फ उसका इस्तेमाल करती है उसके भविष्य के बारे में सोचती नहीं। ऐसी स्वार्थी मां का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

'बोल री कठपुतली' कहानी संग्रह में नौ कहानियां हैं। 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में ऐसी पत्नी चित्रण किया है जिसे पति के पहले प्यार के कारण अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उसे ससुराल में पति और ससुरालवालों का प्यार नहीं मिलता इसी कारण वह चिडचिडी बन जाती है। तो 'अक्षम्य' कहानी के द्वारा ऐसे पति का चित्रण किया है जो अपनी साधारण सी दिखनेवाली पत्नी को घर से बाहर निकाल देता है। फिर नए तरीके से अपनी जिंदगी बसाता है उसमें मुसीबतें आने पर फिर अपनी पहली पत्नी से माफी मांगने जाता है। 'सन्नाटा' कहानी में पति-पत्नी दोनों नौकरी करनेवाले होने के कारण दोनों में अहम् की भावना निर्माण होती है साथ ही एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या भी दिखाई देती है, इसी ईर्ष्या के कारण दोनों में संघर्ष निर्माण होता है। 'हमको दियो परदेस' कहानी में बड़ी बहन मां के बाद बचपन से ही अपने भाई की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है, खुद नौकरी करके उसे बड़ा करती है पर भाई की शादी होने के बाद जिसने भाई के लिए इतना सब कुछ किया वह बहन भाई के लिए पराई हो जाती है। 'परायी बेटी का दर्द' कहानी के द्वारा ऐसी बहू का चित्रण हुआ है जिसे अपने ससुरालवालों के खातिर अपनी मर्जी के खिलाफ अपनी बड़ी दीदी के कातिल की खातिरदारी करनी पड़ती है। 'बोल री कठपुतली' कहानी में किस प्रकार आज के जमाने के लोग लड़कियों की डीग्रियां देखकर ही उसे पसंद करते हैं। शादी के बाद तुरंत उसे नौकरी पर लगाया जाता है। उम्र भर उसे पति और ससुरालवालों के दबाव में जीना पड़ता है। इसी कारण वह उम्र भर दबाव और घुटन की जिंदगी जीती है। 'रानियां' कहानी में आजकल की शिक्षित नारी का चित्रण करते हुए उन्होंने ऐसी नारी का चित्रण किया है जो पीएच्.डी. है और कॉलेज में लेक्चरर है उसे जब पता चलता है कि जिससे वह प्यार करती है वह पहले से ही शादीशुदा है तो उसकी मजबूरी को जानकर वह उसे माफ कर देती है। 'आवारा बादल' कहानी में कभी-कभी परिवार में ऐसी स्थितियां भी होती है जहां मां और बेटे के बीच गलतफहमी निर्माण होती है, इसी कारण दोनों में दूरी निर्मित होती है। पर एक दिन ऐसी स्थिति

आती है कि सारी दूरियां खत्म होती है। 'कोख का दर्प' कहानी द्वारा गोद देने की रस्म का चित्रण करते हुए ऐसी मां का चित्रण किया है जो जिंदगी भर अपने गोद दिए गए बेटे के लिए तरसती रहती है और वह बेटा भी अपने घर से अलग होकर घुटन की जिंदगी जीता है।

मालती जोशी के 'अंतिम संक्षेप' कहानी-संग्रह में जादा तर कहानियों में बूढ़ें लोगों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'अंतिम संक्षेप' कहानी में ऐसी मां का चित्रण किया है जिसे दो बेटे होने पर भी अकेला जीना पड़ता है। बेटे का अपनी मां के घर आना बहू को पसंद नहीं है इसलिए बहू अपने आपसी झगड़े का कारण मां को बना देती है तो मां को अपने बेटे के लिए खुद के घर के दरवाजे बंद करने पड़ते हैं। तो 'क्षरण' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण किया है जो उम्र भर खुद नौकरी कर अपनी मनचाही जिंदगी जीती है। रिटायर्ड होने के बाद अपने बेटे के घर रहने आती है तो उन्हें बार-बार अपमानीत होना पड़ता है। 'मान-अपमान' कहानी में भी बूढ़ी मां को यह दुःख है कि उसका बेटा पढ़-लिख कर इतना बड़ा हो गया है कि जिसे बचपन में ग्यारह साल तक मां से बढ़कर पालनेवाली आया उसे एक नौकरानी के समान लगती है। 'छीना हुआ सुख' कहानी में ऐसी विधवा का चित्रण हुआ है जो अपनी परस्थिति से इतनी लाचार होती है कि उसे उम्र भर दूसरों के सहारे जीना पड़ता है। अपनी बेटी के लिए कुछ करने का उसे मौका ही नहीं मिलता इसलिए वह अपने भांजे के घर की चीजें चुराकर अपनी बेटी को देकर अपने अरमान पूरे करती है। 'मोहभंग' कहानी में पति-पत्नी के बीच वैचारिक दूरी दिखाई देती है। बड़े घर की पत्नी अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल और हॉस्टेल में भेजना जरूरी समझती है पर पति अपनी बेटियों को अपने पास रखना चाहता है इससे दोनों में तनावपूर्ण वातावरण निर्माण होता है। 'अपने-अपने दायरें' कहानी में आज की पढ़ी-लिखी बहुओं को अपने सास-ससूर बोझ लगने लगते हैं, बहू को अपनी सांस के अंतिम कार्य के लिए कुछ दिन देहात में रहना पसंद नहीं है। वह अपने जीवित ससूर के मरने पर भी देहात न आने का फैसला पहले ही करती है। 'सन्नाटा ही सन्नाटा' कहानी में आर्थिक आभावों के कारण मां को अपने घर की जरूरते पूरी करने के लिए बहू-बेटे द्वारा अपमानीत होना पड़ता है। मालती जोशी ने सिर्फ अपमान और अन्याय सहनेवाली बूढ़ी औरतों का ही चित्रण अपनी कहानी में नहीं दिया बल्कि अपनी 'अतिक्रमण' कहानी में बूढ़ी बुआ के द्वारा एक ऐसी विधवा का चित्रण किया है। जो जवानी में विधवा होने के कारण अपनी बहू का सुख देख नहीं पाती, वह बहू का चैन से जीना मुश्किल कर देती है। बहू विधवा होने पर भी वह उसका पीछा नहीं छोड़ती ऐसी औरत का चित्रण भी उनकी कहानियों में हुआ है।

'एक सार्थक दिन' कहानी संग्रह में अठारह कहानियों का समावेश हुआ है जिनके विषय इस प्रकार है। 'एक सार्थक दिन' कहानी में बेकार युवक का चित्रण किया है। यह युवक पढ़ा-लिखा है पर बेकार है इसलिए उसे घरवालों से अपमानीत होना पड़ता है। एक अनपढ़ लड़के द्वारा उसे सीख मिलती है और वह

कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जाता है। 'मेहमान' कहानी के द्वारा ऐसी बेटी का चित्रण किया है जो शादी के बाद सिर्फ कुछ दिनों के लिए मायके आने पर भी वह अपनी मां की तरफ ध्यान नहीं देती अंत में मां से बातचित किए बगैर ही ससुराल चली जाती है। 'पूजा के फूल' कहानी में डॉक्टरों के द्वारा पीड़ीत मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण भी हुआ है। 'तौलिये' कहानी में सफाई की अत्याधिक सजगता का चित्रण किया है। 'रिश्ते' कहानी में पति-पत्नी के बीच तीसरे का प्रवेश परिवार में किस प्रकार समस्या निर्माण करता है इसका चित्रण हुआ है। 'साजिश' कहानी के द्वारा एक नारी को ससुरालवालों तथा मायकेवालों के द्वारा किस प्रकार आरोपित होना पड़ता है इसका चित्रण हुआ है। 'बोझ' कहानी में अपनी मजबूरी के कारण मां-बाप पर अपनी बेटी को किसी अपात्र के गले मढ़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। 'अपराजिता' कहानी में ऐसी बेटी का चित्रण हुआ है जो अपना सारा जीवन अपने घर और भाई-बहनों के लिए समर्पित कर देती हैं। 'विदा' कहानी के द्वारा प्रेम विवाह के कारण आपसी रिश्तों में उपस्थित दरार को चित्रित किया है। 'नए बंधन' कहानी में एक निसंतान औरत को बाढ़ में बच्ची मिल जाना और उसके पति द्वारा उस अनाथ बच्ची की जिम्मेदारी लेना इसका चित्रण किया है। 'ऊब' कहानी में पति की दूरी के कारण ससुरालवालों से आतंकित बहू का चित्रण हुआ है। 'आरंभ' कहानी में शादी से पहले देखे हुए सपनों का टूटना और पति-पत्नी के सहचर्य से नए जीवन की शुरुआत का चित्रण किया है। 'एक शहादत एक फलसफा' कहानी में प्रेम असफल होने के कारण अनचाही लड़की से शादी हो जाना और अपनी पत्नी से अच्छी तरह से बर्ताव न करना फिर अपनी गलती जानकर पत्नी को अपनाना ऐसे इंसान का चित्रण इस कहानी में हुआ है। 'बिछोह' कहानी में किस प्रकार जड़ चेतन के साथ मनुष्य का अतीत जुड़ा हुआ होता है और सुख-दुःख के समय वह उसे किस प्रकार याद आता है इसका चित्रण इस कहानी में हुआ है। 'अनिकेत' कहानी में बेटा पढ़-लिख जानेपर अच्छी जगह पर नौकरी और अमीर बीवी भी पाता है लेकिन वह अपने बूढ़े मां-बाप भूल जाते हैं। उनकी छोटी सी इच्छा भी बेटों द्वारा पूरी नहीं होती। 'विकल्प' कहानी में दहेज की कमी के कारण गरीब घर की लड़कियों की शादी के लिए उन्हें इंतजार करना पड़ता है, उनके सपने टूट जाते हैं जवानी बुढ़ापे में बदलने लगती है। तो 'उधार की हंसी' कहानी में आर्थिक स्थिति से मजबूर लोगों को अपनी मूल स्थिति छुपाकर संपन्नता का दिखावा करना पड़ता है और उदार की हंसी अपने चेहरे पर लानी पड़ती है।

मालती जोशी की कहानियां आधुनिकता से ओत-प्रोत है। इनकी कहानियों में जो चित्रण आया है, वह आज के समाज का पर्दापाश करता है। जो महिलाएं अपने आपको पढ़ी-लिखी समझती है वह ही जादा परंपरागत या अड़ंबर पूर्ण व्यवहार करती है। मालती जोशी की कहानियों के पात्र शिक्षित है लेकिन आपने आप में हारे हुए दिखाई देते हैं। नारियां शिक्षित है लेकिन परिवार से पीड़ित है, इसमें कहीं पति से,

कहीं परिवार से, कहीं समाज से तो कहीं संतान से पीड़ित है। कुछ कहानियों की नायिकाएं उच्च शिक्षित है, नौकरी करनेवाली है, परंतु संतुष्ट नहीं हैं।

मालती जोशी की कहानियों में रूढ़ि परंपराओं का खंड़न, टूटते परिवार, बिगड़ते कौटुंबिक संबंध, आर्थिक विवशता से घिरे परिवार वेतनभोगी महिलाओं की समस्याएं, गरीबी के कारण विवाह की समस्या, प्रेम : बदलती मानसिकता, बिखरता प्रेम, आधुनिकता के नाम पर नारियों का शोषण, बदलते संदर्भ इन सभी का चित्रण हुआ है।

संदर्भ संकेत

1. उपेंद्रनाथ अश्क - हिंदी कहानी : एक अंतरंग परिचय, पृ. 23
2. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्यकोश भाग - 1, पृ. 158
3. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृ. 262
4. वही, पृ. 262
5. (डॉ.) सूरेश सिंह - हिंदी कहानी : उदभव और विकास, पृ. 37-38
6. उपेंद्रनाथ अश्क - हिंदी कहानी : एक अंतरंग परिचय, पृ. 23
7. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 13
8. वही, पृ. 40-41
9. वही, पृ. 54
10. वही, पृ. 85
11. वही, पृ. 105
12. वही, पृ. 112
13. वही, पृ. 120
14. वही, पृ. 127
15. वही - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 23
16. वही, पृ. 47
17. वही, पृ. 50
18. वही, पृ. 63
19. वही, पृ. 87
20. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 17
21. वही, पृ. 29
22. वही, पृ. 36
23. वही, पृ. 55
24. वही, पृ. 63

25. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 84
26. वही, पृ. 93
27. वही, पृ. 115
28. वही, पृ. 125-126
29. मालती जोशी- अंतिम संक्षेप, पृ. 35
30. वही, पृ. 50
31. वही, पृ. 61
32. वही, पृ. 74
33. वही, पृ. 88
34. वही, पृ. 103
35. वही, पृ. 103
36. वही, पृ. 109
37. वही, पृ. 128
38. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 16
39. वही, पृ. 19
40. वही, पृ. 30
41. वही, पृ. 39
42. वही, पृ. 51
43. वही, पृ. 57
44. वही, पृ. 63
45. वही, पृ. 70
46. वही, पृ. 76
47. वही, पृ. 86
48. वही, पृ. 91
49. वही, पृ. 98
50. वही, पृ. 102
51. वही, पृ. 104
52. वही, पृ. 111
53. वही, पृ. 117
54. वही, पृ. 128
55. वही, पृ. 135
56. वही, पृ. 143